लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अंकुर

122-125 वाँ संयुक्तांक

अप्रैल 2021 से मार्च 2022

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017

कुर्सियों पर बांए से:

सुश्री सीमा गुप्ता (वरिष्ठ लेखा अधिकारी), श्री होवैदा अब्बास (प्रधान महालेखाकार), श्री शीशराम वर्मा (उप महालेखाकार), श्री राकेश रंजन मिश्रा (हिंदी अधिकारी)

खड़े हुए बांए से:

श्री मनीष कुमार (कनिष्ठ अनुवादक), सुश्री कविता शर्मा (कनिष्ठ अनुवादक), सुश्री एकता (वरिष्ठ अनुवादक), श्री अंकित कुमार (कनिष्ठ अनुवादक)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अंकुर

122-125 वाँ संयुक्तांक अप्रैल 2021 से मार्च 2022

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017

प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक	:	**श्री होवैदा अब्बास** प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़-160017
सरंक्षक	:	**श्री शीशराम वर्मा** उप महालेखाकार (प्रशासन)
मुख्य संपादक	:	**सुश्री सीमा गुप्ता** वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक	:	**श्री राकेश रंजन मिश्रा** हिन्दी अधिकारी
संपादन सहयोग	:	**सुश्री एकता** वरिष्ठ अनुवादक **श्री अंकित कुमार** कनिष्ठ अनुवादक **श्री मनीष कुमार** कनिष्ठ अनुवादक **सुश्री कविता शर्मा** कनिष्ठ अनुवादक
मुख पृष्ठ	:	**कैपिटल कॉम्पलैक्स, चंडीगढ़** (सौजन्य - इंटरनेट)
अंक	:	122 से 125 वाँ संयुक्तांक
प्रतियां	:	एक सौ पचास
प्रकाशक	:	**राजभाषा कार्यान्वयन समिति,** कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.चण्डीगढ़
मूल्य	:	**राजभाषा के प्रति निष्ठा।**
मुद्रक	:	**यूनिक ट्रेडर्स** एम. डबल्यू 36, इन्डस्ट्रीयल ऐरीया फेस-1,चण्डीगढ़।

नोट: रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे

अनुक्रमणिका

प्रकाशक विवरण		02
अनुक्रमणिका		03
संदेश		04-08
मुख्य संरक्षक का संदेश		09
सरंक्षक का संदेश		10
संपादकीय		11
पाठकों के पत्र		12

आलेख

"ईमानदारी"	गणेश कुमार मीना	14
प्राकृतिक चिकित्सा: एक वरदान	रिंकू कश्यप	15-17

कविता

ग़जल	सुनिल कुमार गुप्ता	22
गाँव और शहर	सीमा गुप्ता	23
कवि और कविता	सौरव	24
हिंदी की व्यथा	विनय कुमार **गर्ग**	**25**
सवाल	एकता	26
जीने की असली उम्र	हरबंस कौर ओबेरॉय	27
ये बगावत...	अंकित कुमार	28
"ख्वाब"	मनीष कुमार	29
शतरंज	अनुरुद्ध गर्ग	29

कहानी

एक सवाल	मंजीत कौर मीत	31-33
नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा	दिनेश तिवारी	34-35
पापा आई लव यू	आशीष देवगण	36-39

कार्यालयीन समाचार

खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियां	40-42
नियुक्तियां, पदोन्नतियां एवं सेवानिवृत्तियां	43-46

सत्यमेव जयते

विशाल बंसल
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हरियाणा

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "अंकुर" के 122-125 वें अंक का प्रकाशन शीघ्र किया जा रहा है। इसके लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

हिंदी पत्रिका का मुख्य उद्देश्य कार्यालयीन कार्य में हिंदी को बढ़ावा देना, कार्यालय में वर्षभर आयोजित विभिन्न प्रकार की गतिविधियों व कार्यक्रमों से अवगत करवाने के साथ ही अधिकारियों/कर्मचारियों की रचनात्मक प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना है। आशा है आपके कार्यालय की पत्रिका "अंकुर" भी इसी पथ पर अग्रसर होते हुए राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान प्रदान कर अपने बहुद्देशीय लक्ष्यों को प्राप्त करके सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करेगी। यह पत्रिका साहित्यिक एवं रचनात्मक मूल्यों के प्रति सदैव समर्पित रही है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति, सफल प्रकाशन तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

विशाल बंसल
विशाल बंसल

सत्यमेव जयते

विशाल बंसल
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब

संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 122-125 वें अंक का प्रकाशन शीघ्र होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े सभी लेखकों तथा संपादन-मंडल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके सद्प्रयासों से पत्रिका यहाँ तक पहुँचने में समर्थ हुई है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से विचारों एवं भाषा के साथ-साथ संस्कृतियों का भी आदान-प्रदान होता है। कार्यालयों के बीच यह पत्रिकाएं वैचारिक सेतु का कार्य करती हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि "अंकुर" पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की तरह कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक एवं इसके प्रति अभिरूचि और जागरूकता का वातावरण बनाने में प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

विशाल बंसल
विशाल बंसल

सत्यमेव जयते

सुशील कुमार ठाकुर
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
चंडीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकार अत्यन्त हर्ष हुआ कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 122-125 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इसके लिए मैं पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

राजभाषा हिंदी समस्त देश को जोड़ने का माध्यम है। भारतीय संस्कृति, सभ्यता और विचारधारा को हिंदी सहजता से अभिव्यक्त करती है। ये पत्रिकायें न सिर्फ कर्मचारियों की सृजनशीलता तथा रचनात्मकता को प्रदर्शित करती हैं, बल्कि दैनिक जीवन में हिंदी के प्रयोग के लिए भी प्रोत्साहित करती हैं। कार्यालयी कर्तव्यों की सीमा से बाहर जीवन के हर क्षेत्र में हिंदी की स्वीकार्यता निरंतर बढ़ी है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक राजभाषा की प्रगति में सहायक सिद्ध होगा।

पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति एवं सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

सुशील

सुशील कुमार ठाकुर

सत्यमेव जयते

नाज़ली जे. शाईन
महालेखाकर (लेखा एवं हक़.)
हरियाणा, चंडीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़ की हिंदी पत्रिका "अंकुर" के 122-125 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभागीय पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं तथा विभिन्न कार्यालयों में होने वाली सांस्कृतिक गतिविधियों से अवगत कराती हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पित होते हुए हम सब का संवैधानिक दायित्व है कि हम अपना कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करें, जिससे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में वृद्धि हो सके। हिंदी एक समृद्ध एवं सशक्त भाषा है, इसमें कार्य करके हमें गर्व का अनुभव होना चाहिए।

पत्रिका के सम्पादन एवं प्रबंधक मंडल के प्रयासों की सराहना करते हुए मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

नाज़ली जे. शाईन

सत्यमेव जयते

वी.एस. वेंकटनाथन
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं
चंडीगढ़

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "अंकुर" के 122-125 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी पत्रिकाओं का राजभाषा 'हिंदी' की विकास यात्रा में सराहनीय योगदान रहा है। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "अंकुर" कार्यालय में विभिन्न प्रतिभा संपन्न रचना-धर्मियों को साहित्यिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान कर रही है तथा पाठकों में राजभाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

पत्रिका प्रकाशन के इस अभियान में अपने परिश्रम,लगन,रचनाधर्मिता और प्रयासों का योगदान देने वाले सभी अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशंसा और बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

वी.एस.वेंकटनाथन

सत्यमेव जयते

होवैदा अब्बास
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़

मुख्य संरक्षक का संदेश

एक भाषा के रूप में हिंदी न केवल भारत की पहचान है बल्कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता की वाहक भी है। हिंदी भाषा के विकास की दिशा में "अंकुर" पत्रिका एक छोटा सा कदम है।

"अंकुर" पत्रिका राजभाषा के प्रति निष्ठा का प्रतीक है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी के लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। "अंकुर" पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के कर्मचारियों को अपने मनोभावों को अपनी राष्ट्र भाषा में व्यक्त करने का अवसर मिलता है।

"अंकुर" पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल और रचनाकारों को साधुवाद। मैं आशा करता हूँ कि "अंकुर" पत्रिका प्रत्येक वर्ष सफल रूप से प्रकाशित होती रहे।

होवैदा अब्बास

सत्यमेव जयते

शीशराम वर्मा
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.व हक.)
पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़

संरक्षक का संदेश

"अंकुर" पत्रिका का 122-125 वां अंक आपको सौंपते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। विभागीय पत्रिकाओं से कार्यालय के कर्मचारियों में हिंदी भाषा के प्रति निष्ठा को बढ़ावा मिलता है, साथ ही कार्यालय की गतिविधियों से सभी को अवगत करवाया जाता है।

पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा को उजागर करने का अवसर मिलता है। पत्रिका का प्रकाशन रचनाकारों के अतुलनीय योगदान से ही संभव हो पाता है।

मैं पत्रिका के सभी रचनाकारों और संपादक मंडल का आभार व्यक्त करता हूँ। "अंकुर" पत्रिका सदैव नए कीर्तिमान स्थापित करती रहे, इसी कामना के साथ मैं नए कलेवर और नयी रचनाओं के साथ "अंकुर" पत्रिका आपके सम्मुख प्रस्तुत करता हूँ।

शीशराम

शीशराम
उप महालेखाकार (प्रशासन)

सत्यमेव जयते

संपादकीय

भारत बहुभाषी राष्ट्र है। भाषा की सार्थकता अभिव्यक्ति में होती है। देश के चारों दिशाओं में करोड़ों व्यक्ति न सिर्फ हिंदी समझते हैं बल्कि बोलते और लिखते भी हैं। हिंदी ने लोगों को एकत्रित कर अंग्रेजों के क्रूर और दमनात्मक सिद्धांतों के खिलाफ खड़ा किया। हिंदी स्वाधीनता संग्राम की भाषा रही है, इसलिए आजादी से पहले ही हिंदी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी थी।

हिंदी देश की संपर्क भाषा है। आजादी के बाद हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी और तब से ही केन्द्रीय सरकार के कार्यालय हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने तथा प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास करने लगे। हालांकि, अनुवाद एक जरिया है जिससे हिंदी को बढ़ाने का प्रयास किया जाता रहा है, किन्तु हिंदी में मूल कार्य करने की प्रवृत्ति को अपनाना आवश्यक है। इससे न सिर्फ समय की बचत होगी, बल्कि तथ्यों को मूल रूप में व्यक्त किया जा सकेगा। हिंदी को प्रसारित करना हमारा संवैधानिक दायित्व है और हमें वर्तमान तकनीकी युग का लाभ उठाते हुए अपने लक्ष्य को हासिल करना होगा।

प्रांतीय भाषाएं हमारी सांझी संस्कृति की विरासत हैं और उस संस्कृति को रंग देने में हिंदी अहम भूमिका निभा रही है। हिंदी की उन्नति में ही हमारा हित है। दूसरी ओर देखें तो अंग्रेजी की दावेदारी कम होने का नाम नहीं ले रही क्योंकि इसका मोह खत्म नहीं हो रहा है। दरअसल अंग्रेजी भाषा हमारी शिक्षा व्यवस्था पर मैकाले द्वारा थोपी गई भाषा है और पराधीनता का स्मारक है। फिर भी, यह प्रबल है, इस पर चिंतन की आवश्यकता है। हिंदी भाषा का अधिक से अधिक उपयोग ही हमें अंग्रेजी के मोह से मुक्त कर सकता है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि विदेशों में भी हिंदी भाषा का चलन बढ़ा है। देश में हिंदी का प्रसार हो, इसके लिए हमें अपना दैनिक कामकाज हिंदी में ही करने का संकल्प करना चाहिए।

अंकुर पत्रिका का यह अंक इस दिशा में एक प्रयास है। उम्मीद है आपको यह अंक पसंद आयेगा। आपकी प्रतिक्रियाओं/सुझावों का स्वागत है।

राकेश रंजन मिश्रा
हिंदी अधिकारी

पाठकों के पत्र

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.

संख्या: हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/प्रतिक्रिया/2022-23/35

दिनांक: 17.06.2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़-160017

विषय: **हिंदी गृह पत्रिका 'अंकुर' के 118-121वें अंक का प्रेषण।**

24 JUN 2022

महोदय,

ई-मेल द्वारा दिनांक 15.06.2022 को आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'अंकुर' के 118-121वें ई-अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं। 'अजेय-एक अप्रतिम सम्पूर्ण साहित्यकार', 'मां मेरी प्यारी मां', 'सोशल डिस्टैंसिंग', 'मानवीय दृष्टिकोण', 'दुनियादारी', 'नारी विमर्श की मैं हुंकार' एवं 'मेरी मां' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं प्रेरणादायक हैं। कुशल संपादन के लिए संपादक मंडल प्रशंसा के पात्र हैं।

हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका 'अंकुर' के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

सत्यमेव जयते

प्रधान महालेखाकार (ले० व ह०) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं० 4 व 5, सैक्टर 33–बी, चण्डीगढ़–160020
टेलीफोन नं० 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं० 0172–2603824
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agaeharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2022-23/102
दिनांक: 23.06.2022

सेवा में

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पंजाब
चंडीगढ़ ।

महोदय,

विषय : हिंदी गृह पत्रिका 'अंकुर' के 118.-121वें अंक के सम्बन्ध में ।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 15.06.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'अंकुर' के 118-121वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं । पत्रिका में समाविष्ट श्री राहुल वर्मा का लेख 'सोशल डिस्टेंसिंग- क्या हमेशा के लिए बन जाएगी सामाजिक दूरी', श्री माधव कौशिक का लेख 'अज्ञेय- एक अप्रतिम संपूर्ण साहित्यकार' एवं श्रीमति मंजीत कौर मीत का लेख 'जब कोई फौजण होती है' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है ।

इसके अतिरिक्त श्री अंकित कुमार की कविता 'ये दौर', श्रीमती संतोष धीमान की कविता 'नारी विमर्श की मैं हुंकार', एवं श्री आशीष देवगण की कविता 'चिता' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया
पूजा सिंह
हिंदी अधिकारी

संख्या.राजभाषा 8(II)/2022-23/जा.क्र. ....
दिनांक:- /06/2022

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.), पंजाब व
यू. टी. चण्डीगढ़-160017

विषय : हिंदी पत्रिका "अंकुर" के 118-121 वें अंक पर प्रतिक्रिया संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "अंकुर" के 118-121 अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद!

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री अंकित कुमार की कविता 'ये दौर', श्री राजीव कुमार बंसल का लेख 'पीढ़ी का अंतर' तथा श्री गणेश कुमार मीना का लेख 'मानवीय दृष्टिकोण' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं । पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता/-
हिंदी अधिकारी

कार्यालय: निदेशक,वित्त एवं संचार लेखा परीक्षा कार्यालय, बेंगलूरू
OFFICE OF THE DIRECTOR
FINANCE & COMMUNICATION AUDIT OFFICE, BENGALURU

सं.हि.क./हि.पत्रि.पा./2022-23/33 दिनांक: 22.06.2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यू.टी.चंडीगढ़

विषय- हिंदी गृह-पत्रिका 'अंकुर' के 118-121वें अंक की पावती ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी गृह-पत्रिका **'अंकुर'** के 118-121वें अंककी एक ई-प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम दमनमोहक है। श्री माधव कौशिक का लेख 'अज्ञेय-एक अप्रतिम संपूर्ण साहित्यकार', श्री अंकित कुमार की कविता 'ये दौर', श्रीमती मंजीत कौर मीतका लेख 'जब कोई फौजण होती है', श्री अम्बरीश भृंगु का लेख 'जानवर कौन?', आदि रचनाएँ रुचिकर एवं सराहनीय हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीयएवं विचारणीय हैं।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

धन्यवाद ।

भवदीया,

ह/-
(डॉ. प्रियंका बी.गोस्वामी)
हिंदी अधिकारी

आलेख

"ईमानदारी"

:- गणेश कुमार मीना

ईमानदारी व्यक्तित्व की ऐसी विशेषता होती है, जिससे व्यक्ति आंतरिक रूप से शांति व संतुष्टि प्राप्त करता है। ईमानदारी ही मनुष्य के आत्मिक उत्थान का माध्यम है। इसी के द्वारा नैतिक व आध्यात्मिक सुखानुभूति संभव है।

इस भौतिकवादी चकाचौंध में हमने ईमानदारी जैसे मूल्यों को पता नहीं कहाँ खो दिया है। प्रत्येक सार्वजनिक व निजी सिस्टम में हम देखते हैं, ईमानदारी जैसे आदर्शवादी गुण को मजाक के रूप में लिया जाता है। आज हम भौतिकवादी सुख की प्राप्ति के लिए प्रत्येक नकारात्मक/सकारात्मक रास्ते को अपनाने को तैयार हैं, जिससे हमारे जीवन में शांति, समन्वय, सामंजस्य, सद्भावना गायब सी हो गई है या बहुत दूर जा चुकी है।

हमारी सोच ऐसी बन चुकी है और हम ऐसे ढ़ल चुके हैं कि हम किसी भी कीमत पर सबकुछ पाना चाहते हैं। हमारी चाहत में केवल वे चीजें/वस्तुएं शामिल हैं जो हमें केवल क्षणिक ख़ुशी व क्षणिक सुख प्रदान करती हैं। इस अंधाधुंध दौड़ में हम आज ऐसी जगह पर पहुँच चुके हैं कि देश की जनसँख्या 135 करोड़ होते हुए भी प्रत्येक व्यक्ति अकेलापन, आंतरिक सूनापन व असुरक्षित महसूस कर रहा है। इसलिए जीवन में प्यार, समन्वय, शांति, आपसी मेल-मिलाप तथा आध्यात्म से जुड़ने वाले रास्तों को चुनें मानव मात्र की सेवा करें एवं बड़ों का सम्मान करें।

अपने बच्चों में जन्म से ही नैतिक मूल्यों का विकास करें और उन्हें ऐसा माध्यम/प्लेटफ़ॉर्म उपलब्ध करायें जिससे वे प्रगतिशील समाज व उच्च मूल्यों वाले व्यक्तित्व का विकास कर सकें।

"एक ईमानदार व्यक्ति ही समाज/परिवेश में सच्ची इज्जत व सम्मान पाता है भले ही बुरे/भ्रष्ट लोगों के बारे में दुनिया कितनी भी सकारात्मक व सम्मान की बातें करें।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

महात्मा गांधी

प्राकृतिक चिकित्सा: एक वरदान

:- रिंकू कश्यप

आज की भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में, मिलावट के युग में और गलत खान-पान के कारण प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रोग से ग्रस्त है। आज के समय में शायद ही कोई ऐसा घर होगा जिसमें घर का कोई न कोई सदस्य दवाईयों पर आश्रित न हो। जब व्यक्ति भिन्न-भिन्न प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त होने लगता है तो वह उसके उपचार के लिए यहाँ-वहाँ भटकना शुरू कर देता है। अंततः उसको उपचार मिल भी जाता है। अंग्रेजी दवाईयों के सेवन से उसके रोग को ठीक करने का प्रयास तो किया जाता है, लेकिन कहीं न कहीं उन दवाईयों के दुष्प्रभाव से अन्य कई रोग शरीर में उत्पन्न होने लगते हैं। इसके कारण इंसान बीमारियों के चक्रव्यूह में फंसता ही चला जाता है। आज के समय में भिन्न-भिन्न रोगों का निदान करने हेतु विभिन्न प्रकार की दवाईयां, शल्य-चिकित्सा, अलग-अलग तरह की थैरेपियां, योगाभ्यास व प्राणायाम एवं प्राकृतिक चिकित्सा आदि का सहारा लिया जाता है। इनमें से प्राकृतिक चिकित्सा ऐसी पद्धति है जो हमारी प्राचीन संस्कृति व उपचार पद्धति से जुड़ी हुई है, जिसका प्रयोग पुराने समय से हमारे पूर्वज तथा योगाचार्य आवश्यकतानुसार करते रहे हैं। मानव जीवन की संरचना में प्रकृति के पांच तत्वों (जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश) का ही योगदान है अथवा यूँ कहें कि मानव जीवन का जन्म ही इन पाँच तत्वों से मिलकर हुआ है। मानव जीवन के इन पाँच घटकों पर ही प्राकृतिक चिकित्सा आधारित है।

प्राकृतिक चिकित्सा:-

इस चिकित्सा में सभी प्रकार के रोगों का उपचार प्राकृतिक घटकों की शरीर में हुई कमी को पूरा करके शरीर को शुद्धिकरण करके, विषैले तत्वों को शरीर से निष्कासित करके बिना किसी दवाईयों के सेवन से प्राकृतिक रूप से ठीक किया जाता है।

प्राकृतिक चिकित्सा में निम्नलिखित चरण हैं, जिनका उपयोग मरीज की बीमारी को ध्यान में रखकर उसकी आवश्यकतानुसार किया जाता है:-

1. मिट्टी की पट्टी:-

इस विधि में धरती से 3-4 फुट नीचे से निकाली गई शुद्ध मिट्टी का उपयोग विभिन्न रोगों के उपचार के लिए किया जाता है। मिट्टी को जल में गूंथकर कपड़े में बाँध कर पट्टियाँ बनाई जाती हैं तथा रोग के अनुसार शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों में इसका प्रयोग किया जाता है। आँखों पर, माथे पर तथा अन्य अंगों पर इसका विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग किये जाने वाले अंगों से कपड़ों को शरीर से हटाकर कम से कम 20 मिनट उस अंग पर रखा जाता है।

(क) सर्वांग मिट्टी प्रयोग:-

इस विधि में जमीन के नीचे से निकाली गई साफ मिट्टी को लगभग 12 घंटे पूर्व भिगोकर लेप तैयार किया जाता है। इस लेप को पूरे शरीर पर सिर से आरंभ करते हुए पांव तक मोटा-मोटा लेप करते हुए लगाया जाता है। लगभग 1 घंटे तक इस लेप को शरीर पर लगा रहने दिया जाता है। इसके

अतिरिक्त मिट्टी के घोल के गड्डे में लिटाकर भी मिट्टी स्नान दिया जाता है। लगभग 40 मिनट से 1 घंटे के पश्चात् लेप के सूखने के उपरांत मरीज को जल स्नान दिया जाता है।

(ख) मिट्टी स्नान के लाभ:-

मिट्टी पट्टी अथवा स्नान के प्रयोग से शरीर को निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं:-

i. यह स्नान शरीर को शीतलता प्रदान करता है।

ii. शरीर से गंदे (दूषित) पदार्थों को घोलकर अथवा अवशोषित करके शरीर से बाहर निकाल देता है।

iii. कब्ज, तनाव, सिरदर्द व रक्तचाप में यह स्नान अति लाभप्रद है।

iv. यह सौंदर्यवर्धक है। इसके प्रयोग से त्वचा एवं चेहरे पर चमक बढ़ती है।

2. एनिमा प्रयोग:-

पेट में स्थित बड़ी आँतों में फंसे हुए मल को साफ करने तथा कब्ज आदि भयंकर रोगों को ठीक करने के लिए एनिमा या वस्ति का प्रयोग बहुत ही लाभप्रद है। लगभग प्रत्येक रोग को ठीक करने के लिए सर्वप्रथम एनिमा का सहारा लिया जाता है। इसके प्रयोग से आँतों की गति में वृद्धि होती है। पाचन तंत्र सुधरता है। आँतों में सड़न व कब्ज जैसे रोगों का नाश होता है। रोग के अनुसार नीम के पानी या नींबू रस को गुनगुने जल में मिलाकर एनिमा प्रयोग बहुत लाभदायक होता है।

3. मालिश /मसाज:-

मालिश से शरीर का प्रत्येक अंग पुष्ठ होता है तथा उनमें रक्त का संचार उन्नत होता है।

मालिश की विधि:-

हवायुक्त स्थान पर कम से कम वस्त्र तथा अनुकूल ताप वाले कक्ष में लाभार्थी को लिटाया जाता है और उसके पश्चात् सिर से प्रारंभ करते हुए कान में तेल, नाभि में तेल, दोनों तलुवे में तेल लगाया जाता है। इसके उपरांत पैर, कमर, हाथ, गर्दन, छाती, पेट व चेहरे की अच्छी प्रकार से मालिश की जाती है। इस विधि में थपकी, चुटकी तथा ताली आदि का भी प्रयोग किया जाता है। इस विधि का समय लगभग कम से कम एक घंटा होता है। उसके पश्चात् 15 से 30 मिनट तक धूप में बैठाया जाता है तथा शरीर को रगड़-रगड़ कर तौलिये से साफ किया जाता है।

लाभ:-

(i) मालिश स्वस्थ तथा रोग दोनों अवस्थाओं में बहुत उपयोगी है। इससे शरीर में नए अवयवों का निर्माण होता है तथा मृत तंतु व हानिकारक तत्व शरीर से बाहर निकलते हैं।

(ii) गठिया रोग, अनिद्रा तथा दुर्बलता में अत्यंत उपयोगी है।

(iii) नसों के दर्द व सिरदर्द में यह अत्यंत उपयोगी है।

(iv) शरीर में झुर्रियों को दूर करके शारीरिक कांति को बढ़ाती है।

(v) शरीर की ढ़ीली पड़ चुकी त्वचा व मांसपेशियों को मालिश के द्वारा मजबूती प्रदान की जाती है।

4. वाष्प स्नान/भाप स्नान:-

इस विधि में एक केबिन में कुर्सी पर लाभार्थी को बैठा दिया जाता है। एनिमा के बाद पेट साफ होने की स्थिति में पर्याप्त पानी पिलाकर तथा सिर को पूरी तरह गीला करके, गीला तौलिया सिर पर रखा जाता है।

उसके पश्चात् स्टीम को शुरू किया जाता है। लाभार्थी को बाहरी ठंडी हवा का स्पर्श न हो इसलिए इस स्थान को वायुरोधी रखा जाता है। 15 मिनट से 20 मिनट के बाद बाहर निकलने के तुरंत बाद ठंडे पानी का स्नान करवाया जाता है। यदि तुरंत बाद ठंडे जल का स्नान नहीं लिया जाता है तो दिनभर सिरदर्द रहने की संभावना रहती है। तत्पश्चात पूरे वस्त्र पहन कर ही बाहर निकलना उचित है।

लाभ:-

(i) यह त्वचा व फेफड़ों के माध्यम से शरीर के हानिकारक तत्वों को बाहर निकालती है।

(ii) वाष्प स्नान से शरीर का शोधन तीव्रता से होता है। यह गठिया, पीलिया, मोटापा, लकवा, आधे सिरदर्द तथा बहुत से अन्य रोगों में लाभकारी है।

(iii) यह स्नान ठंड लगना, वायु विकार तथा चर्म रोगों में भी हितकारी है।

5. रीढ़ स्नान:-

विशेष रूप से बने टब में रीढ़, पीठ के बल लेटाकर ठंडे/गर्म जल का स्नान दिया जाता है। इससे रीढ़, कमर एवं गर्दन संबंधी सभी रोगों में लाभ मिलता है। गर्म एवं ठंडे रीढ़ स्नान से साइटिका, सर्वाइकल, कमर दर्द तथा नसों के दर्द में चमत्कारी लाभ प्राप्त होता है। यह स्नान स्नायुतंत्र व नाड़ी को बल प्रदान करता है। इससे रक्त संचालन तीव्र होता है तथा शरीर के रक्तचाप व मानसिक विकारों को भी दूर करने के लिए यह उत्तम विधि है।

6. कटिस्नान:-

एक विशेष प्रकार के बने टब में भरे जल में बैठाकर कटिस्नान करवाया जाता है। रोग के अनुसार इसमें ठंडे तथा गर्म जल का प्रयोग किया जाता है। यह उपचार प्रायः प्रत्येक रोग में आवश्यक तथा लाभदायक है। इस स्नान के प्रयोग से आँतों, किडनी, लीवर तथा मूत्राशय से संबंधित रोगों में लाभ होता है। यह कब्ज जैसे रोगों का नाश करके आँतों की शक्ति को बढ़ाता है। यह स्नान प्रायः ठंडे जल से सुबह-शाम लिया जाता है। गर्म जल से कटिस्नान अथवा ठंडे-गर्म जल से कटिस्नान लेने से कमर दर्द, साइटिका व पेट दर्द जैसे आदि रोगों में अत्यंत लाभ मिलता है।

इस प्रकार हम इस लेख के माध्यम से यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि प्रकृति ने हमें उपहार स्वरूप बहुत कुछ दिया है। हम आवश्यकतानुसार उनका प्रयोग करके बिना किसी दवाई के सेवन से प्रत्येक रोगों से मुक्ति पा सकते हैं।

प्रिय पाठकों ! इसके अतिरिक्त प्राकृतिक चिकित्सा के अन्य बहुत से प्रकार हैं, जिनका उल्लेख मैं अपने आगामी लेख के माध्यम से आप तक पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा।

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

नरेन्द्र मोदी (प्रधानमंत्री)

कार्यालयीन गतिविधियाँ

स्वतंत्रता दिवस के दौरान कार्यालय के कर्मचारीगण सामूहिक गान प्रस्तुत करते हुए ।

स्वतंत्रता दिवस के दौरान कार्यालय के कर्मचारी/अधिकारी राष्ट्रगान गाते हुए ।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

हिंदी पखवाड़े के दौरान श्री होवैदा अब्बास, प्रधान महालेखाकार पुरस्कार प्रदान करते हुए ।

हिंदी पखवाड़ा 2021

कार्यालयीन गतिविधियाँ

गणतंत्र दिवस के अवसर पर श्री सुशील कुमार ठाकुर को पौधा भेंट करते हुऐ ।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार ध्वजारोहण करते हुए

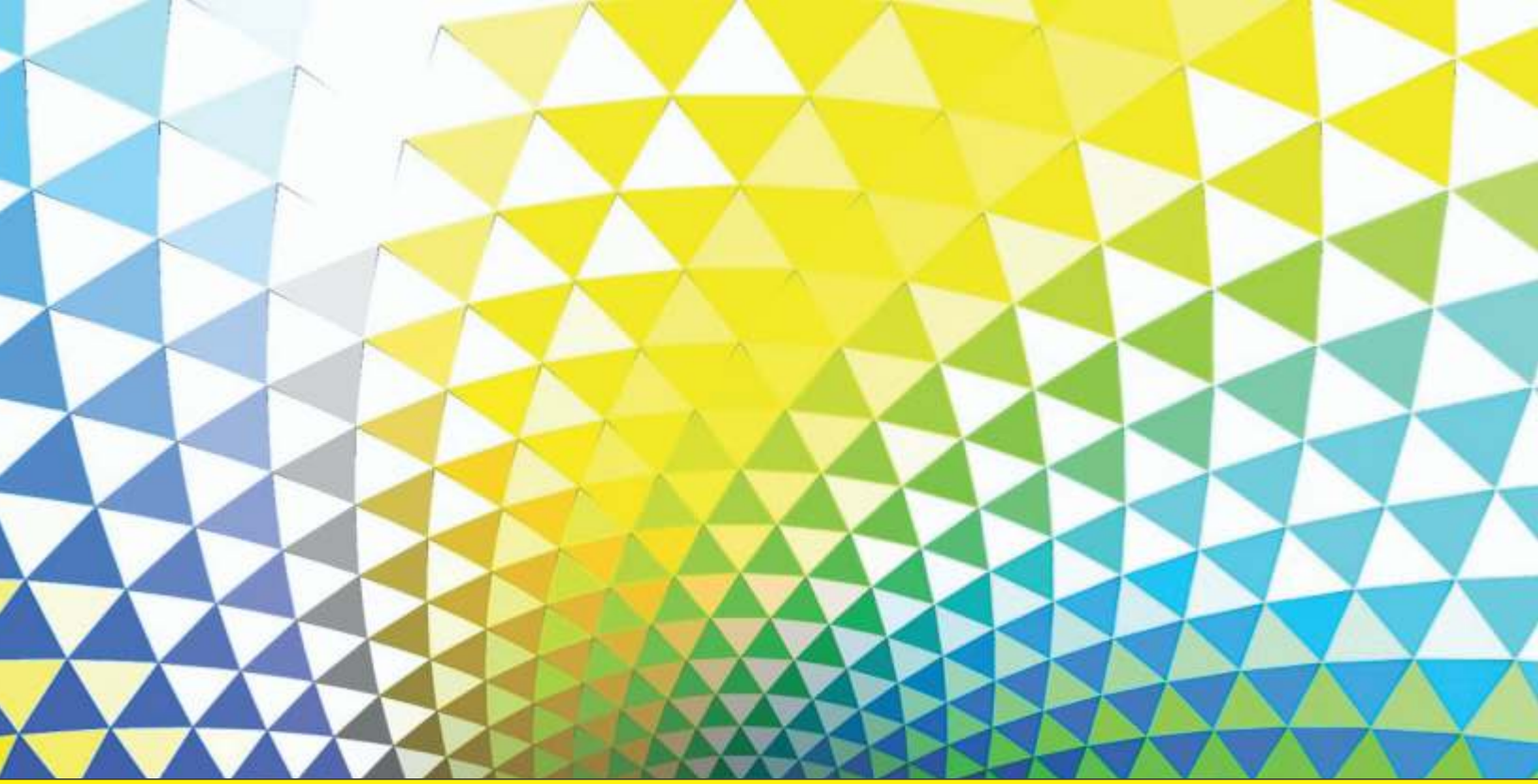

कविता

ग़जल

:- सुनिल कुमार गुप्ता

क़त्ल का डर है तो जुल्फों को सजाया न करो
सामने आओ तो पलकों को झुकाया न करो
सामना चाहने वाले से कभी हो जाए
फेर के नजर को नज़रों से गिराया न करो
लोग कुछ देखते हैं गुस्ताख निगाहों से भी
उठती हुई नजर से नजरों को मिलाया न करो
शाने पे गिरते तेरे गेसू सुनामी का कहर
यूं सरे राह इन्हें झटक के जाया न करो
कौन कहता है कि चाहत में असर होता नहीं
अपने होठों पर इजहार को लाया तो करो
लम्हों लम्हों में ही जीवन यह गुज़र जाएगा
अपने जीवन को ख़ामोशी में गंवाया न करो
दिल के दामन में जो ज़ज्बात छुपा रखे हैं
ओढ़ के रस्मों की चुनरी यूं छिपाया न करो
सुना है हमने तेरी आँखों में क़यामत का कहर
हम पे बेबाक नजर कहर ही बरपाया करो
इन अंधेरों को घड़ी भर के लिए सोने दो
जाग न जायें कहीं शमा जलाया न करो
जमीं की खाक का हो अर्श से मिलन कैसा
बस कर्म हम पे निगाहों का ही कर जाया करो
क़त्ल का डर है तो जुल्फों को सजाया न करो
सामने आओ तो पलकों को झुकाया न करो
सामना चाहने वाले से कभी हो जाए
फेर के नजर को नजरों से गिराया न करो

गाँव और शहर

:- सीमा गुप्ता

आज गाँव का बुलावा तो कल 'शहर' का सफर तय है,
'सुकून' और 'जिम्मेदारियों' के बीच समझौता चल रहा है।
कहने को तो अच्छे हैं ये शहरी चौड़े रस्ते, मगर...
मन आज भी गाँव की उन तंग गलियों में भटक रहा है।
मजबूरियों ने बनाया है इस चकाचौंध का झूठा तमाशबीन,
वरना जो बात थी बुजुर्गों की छाँव में वो यहाँ कहाँ है।
वो लोग और हैं जो इन गगनचुम्बी इमारतों के हिमायती हैं,
मुझमें तो आज भी गाँव के कच्चे आँगन के वो घर बसते हैं।
यूं तो तकलीफ कोई नहीं यहाँ भी, मगर वो बुजुर्गों का
प्यार से सिर पर हाथ फेरना एक टीस की तरह चुभता है।
अपने ही 'अपने' नहीं यहाँ, लगता है हवा में ही चालाकियों का दौर है,
सादेपन और मासूमियत की जो तुम बात करते हो, वो लोग और हैं।
यहाँ रोज एक ही रस्ते पर 'जिंदगी' सिमट सी रही है, वहां
गाँव के हर रस्ते को न जाने कितनी बार नाप आते थे।
ये बड़े पार्क, रंग बिरंगी लाइटें और शहर का अँधा शोरगुल,
उस नीम के पेड़ की छाँव और लालटेनों के आगे कुछ भी नहीं।
महज भीड़ नजर आती है यहाँ हर कोने में सिर्फ लोगों की,
दूर तक आँख पसार कर देखा तो 'अपना' यहाँ कोई भी नहीं।
'माँ' को चिंता है कि बेटा खो न जाए इस आब-ओ-हवा में,
मसला ये है, खोना तो दूर उसके बगैर कभी मन लगा ही नहीं।
वो पूछती है कैसा है? तो कहना पड़ता है 'बिल्कुल ठीक',
फिर सोचता हूँ काश!... इस 'बिल्कुल ठीक' का कुछ तो ठीक होता।
होता है मन दुखी कई मर्तबा, फिर देता हूँ तसल्ली ये कहकर
कि जाना ही पड़ता है घर से दूर घर को सँभालने के लिए।

कवि और कविता

:- सौरव

कैसे लिखता होगा कवि कोई कविता?

कोई अपना दर्द उकेरता होगा

कोई चाँद तारों को देख अभिभूत होता होगा

कोई इबादत, कोई शहादत पर लिखता

कोई अभिव्यक्ति, कोई तन्हाई पर लिखता

कोई शोहरत, कोई कमाई के लिए लिखता

कोई पहचान, कोई सम्मान के लिए लिखता

कैसे लिखता होगा कवि कोई कविता?

कोई मननशील, कोई सामाजिक लिखता

कोई व्यंग्य, कोई आपबीती लिखता

कल्पना से शब्दों के जो मायाजाल बुनता होगा

होता होगा विस्मित भी कि जो लिखना था वो लिख दिया

क्या पाठक उसी भाव को पढ़ेगा जो कवि चाहता है

या लेखन को ही परखा जाएगा,इसी उधेड़बुन से गुजरता होगा।

कैसे लिखता होगा कवि कोई कविता?

क्या 'दिनकर' या 'पाश' हो जाऊंगा

या 'गुलज़ार' या 'जावेद' हो जाऊंगा

क्या समाज का आईना दिखलाएगी कविता

या यूँ ही मन बहलाएगी

क्या क्षणिक अनुभव करवाएगी

या कवि की पहचान बन अमर हो जाएगी

क्या होगी ये कहीं संबोधित या 'अंकुर' में छप जाएगी।

हिंदी की व्यथा

:- विनय कुमार गर्ग

हिंदी अपनी व्यथा कहती है
हिन्द देश में दुःख सहती है
अपने पतन की गाथा खुद
संस्कृत जननी से कहती है
हिंदी अपनी व्यथा...

मैया मैं सूं इक श्रेष्ठ भाषा
फिर क्यूँ झेल रही हताशा
शब्द-व्याकरण वैज्ञानिक मेरे
फिर क्यूँ हिंदी पीछे रहती है
हिंदी अपनी व्यथा...

जहाँ लगे जोगड़ा घर का जोगी
ओर आन गाँव का सिद्ध
ऐसी उपेक्षा हिंदी हेतु भी
आहत मुझे कितना करती है
हिंदी अपनी व्यथा...

लाग-लगाव बेगानी भाषा से
निज भाषा से क्यूँ दुराव किया
भेदभाव अपनी भूमि पर
हिंदी सौतेलापन सहती है
हिंदी अपनी व्यथा...

सर्वोत्तम भावों की अभिव्यक्ति
होती निज भाषा हिंदी में
जब सोच में हिंदी, बात में हिंदी
फिर काम में हिंदी क्यूँ नहीं रहती है
हिंदी अपनी व्यथा...

प्रिया रही साहित्यकारों की
अब वो प्रीत कहाँ रहती है
यहाँ नित खुलें स्कूल अंग्रेजी भाषा के
हिंदी अस्तित्व को डरती है
हिंदी अपनी व्यथा...

बिहंसी जननी सुन व्यथा हिंदी की
संस्कृत ने सुता को दुलार किया
हँस बोली ना हिय कर छोटा बेटी
जन-जन के हृदय में तू बसती है
हिंदी अपनी व्यथा...

ये ठेकेदार अंग्रेजी भाषा के
मन ही मन तुझसे डरते हैं
है गगन समान हिंदी भाषा
जो जुग-जुग से धरा पर रहती है
हिंदी अपनी व्यथा...

हैं बहुत तेरे चाहने वाले
बस कमी है इच्छा शक्ति की
है वनवास ख़त्म अब होने वाला
आवाज जगत की कहती है
हिंदी अपनी व्यथा...

है गूँज अंग्रेजी की क्षण-भंगुर
ना अहित तेरा कुछ होने वाला
नर कब तक ढ़ोएगा पर-भाषा को
मातृभाषा चिरंजीवी रहती है
हिंदी अपनी व्यथा...

सवाल

:- एकता

अक्सर एक सवाल मन में आता है।
क्यूँ नभ में तारा टिमटिमाता है।
क्यूँ नदी निश्छल बहती है।
क्यूँ समंदर शोर मचाता है।
क्यूँ पंछी कलरव करते हैं।
क्यूँ पेड़ हवा से बतियाता है।
क्यूँ फूलों में मकरंद है।
हवा क्यों इतनी मंद है।
फल में रस कहाँ से आता है।
इन बातों से मैं अचंभित हूँ।
सृष्टि को देख आनंदित हूँ।
पल-पल कृतज्ञता का भाव रहता है।
तेरी हर कृति के प्रति मन समर्पित है।
मैं तुझमें हूँ, तू मुझमें है।
पल-पल मन दोहराता है।
नयनों से अश्रु बहता जाता है।

मातृ भाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असम्भव है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र

जीने की असली उम्र

:- हरबंस कौर ओबेरॉय

जीने की असली उम्र तो साठ है, बुढ़ापे में ही असली ठाठ है,

ना बचपन का होमवर्क, ना जवानी का संघर्ष,

ना 40 की परेशानियां, बेफिक्र दिन और सुहानी रात है।

जीने की असली उम्र तो साठ है, बुढ़ापे में ही असली ठाठ है।

ना स्कूल की जल्दी, ना ऑफिस की किट-किट

ना बस की लाईन, ना ट्रैफिक का झमेला,

सुबह योगा, दिनभर खुली धुप में दोस्तों

यारों के साथ राजनीति पर चर्चा आम है।

जीने की असली उम्र तो साठ है, बुढ़ापे में ही असली ठाठ है।

ना मम्मी डैडी की डांट, ना ऑफिस में बॉस की फटकार,

पोते-पोतियों के खेल,बेटे-बहु का प्यार, इज्जत से झुकते सर,

सब के लिए आशीर्वाद और दुआओं की भरमार है।

जीने की असली उम्र तो साठ है, बुढ़ापे में ही असली ठाठ है।

ना स्कूल का डिसिप्लिन, ना ऑफिस में बोलने की कोई पाबंदी,

ना घर पर बुजुर्गों की रोक-टोक, बेफिक्र बातें,

किसी को कुछ भी कहने के लिए आज़ाद हैं,

जीने की असली उम्र तो साठ है, बुढ़ापे में ही असली ठाठ है।

हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।

पुरूषोतम दास टंडन

ये बगावत...

:- अंकित कुमार

ये बगावत खुद की खुद से यूँ बेवजह ना जानिए,
साजिशें मुझे झुकाने की भी की गई यकीं मानिए।

मैं यूँ ही नहीं कहता ये लहजे फकत 'रसीले' हैं,
लोगों को आजमाके देखा अंदर से 'जहरीले' हैं।

मेरी उससे बराबरी कहाँ? मैं जमीं वो फलक सा है,
हाँ, कल तक वो था मेरा पर आज मुझसे अलग सा है।

वो कहता है उसकी परेशानियों का मुझे कहाँ हिसाब है,
गर झांककर देखता दिल में तो दर्द की एक मिसाल है।

अब तारों के बीच ये अकेला चाँद मेरा 'उस्ताद' सा है,
ना जाने कितनी बार इसने मुझसे 'ख्याल-ए-खुदखुशी' छीना है।

खैर... जब तक ये उल्फत-ए-इल्जाम हम पर लगते रहेंगे,
हम कतरा-कतरा खुद ही खुद से रिसते रहेंगे।

और... यूँ ही नहीं उठ रहे हैं दुआओं में मेरे हाथ,
इश्क की शमां बुझा दी है उसने शिकायती लहजों के साथ।

टूटना, बिखरना और फिर से खड़े होना ये जरूरी है क्या?
खैर ये सब सबक ना हों वो जिन्दगी भी भला जिंदगी है क्या?

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।

रविशंकर शुक्ल

"ख्वाब"

:- मनीष कुमार

तुम क्षितिज को छूना चाहते हो,
ना बंधन तुमको प्यारे हैं।

मत नोच मेरे अरमानों को,
इनमें भी चाँद सितारे हैं।

तुम दिनकर की अग्नि से,
तो मैं भी शीतल चंदा सी।

तुम पर्वत से हो कठोर,
तो मैं भी पावन गंगा सी।

तेरी हर मुस्कान पे मैंने,
कितने सुख दुःख वारे हैं।

तेरी ही खातिर तो मैंने,
अपने स्वप्न बिसारे हैं।

तुम परवाज़ जो भरते हो,
मैं भी तो उड़ना चाहती हूँ।

तेरे कदमों की भाँति ही,
मैं भी तो बढ़ना चाहती हूँ।

मेरी ही तो आड़ में तुमने,
अपने ख्वाब सँवारे हैं।

मत नोच मेरे अरमानों को,
इनमें भी चाँद सितारे हैं।

शतरंज

:- अनुरुद्ध गर्ग

खेल चतुरंग, छठी सदी का
भारत के इतिहास से जुड़ा।
वर्णन है जिसका भविष्य पुराण में
हुआ लोकप्रिय सातवीं सदी में।
जंग का मैदान हुआ चौपाट में तब्दील
राजा बना किंग
रथ बना रुक
प्यादा बना पॉन।
चतुरंग से बन गया शह-मात का
दिलचस्प खेल शतरंज का।

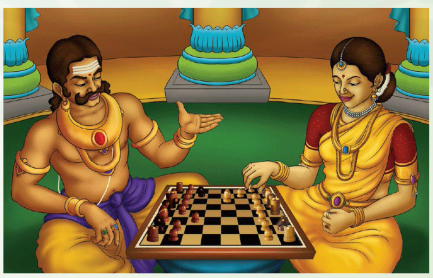

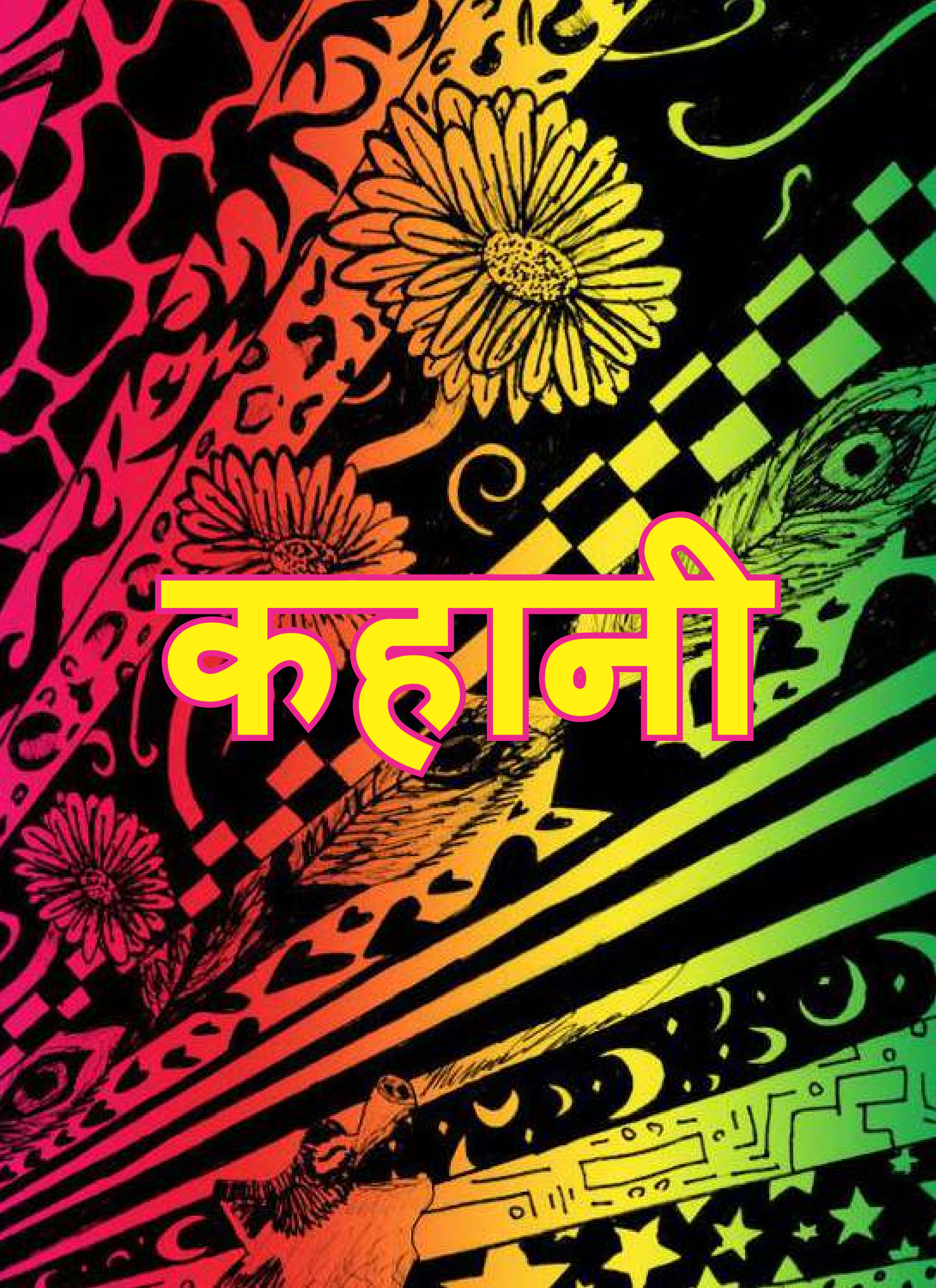
कहानी

एक सवाल

:- मंजीत कौर मीत

देव की पोस्टिंग जब पंजाब के जालंधर शहर में हुई तो हमारी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। घर में खुशियों की लहर दौड़ गई बहुत वर्षों के बाद देव अपने घर वापस लौट रहा था। उसके घर लौटने से बच्चे भी खुश थे। यह सोच कर हम सभी इसलिए खुश थे कि ज्यादा नहीं तो कम से कम तीन वर्ष तो हम इकट्ठे रह सकते हैं। मेरी सरकारी नौकरी की वजह से मैं देव के साथ नहीं जा सकती थी। वैसे तो शहर में हमारा अपना घर था मगर देव की मर्जी थी कि मिलिट्री क्षेत्र में ही परिवार सहित रहा जाए। हमें खुद भी इस क्षेत्र में रहना अच्छा लगता था इसलिए हमने मिलिट्री कॉलोनी में ही रहने का फैसला ले लिया।

देव के रैंक के मुताबिक ऑफिसर कॉलोनी में कोई बंगला खाली न होने की वजह से हमें जवानों के क्वार्टर में ही रहना पड़ा परन्तु इस छोटे से क्वार्टर में रह कर बच्चे खुश थे क्योंकि उनको लगता था कि फौजियों के देश में रह रहे हैं। यहाँ से मेरा स्कूल चाहे दूर था लेकिन प्रतिदिन आने-जाने की वजह से मुझे आदत पड़ गई थी।

फौजी कॉलोनी का क्षेत्र बहुत खुशगवार था। वहां पर भिन्न-भिन्न राज्यों के लोग रहते थे जिनकी अपनी भाषा तथा अपने ही रीति-रिवाज थे। ऐसे लगता था कि पूरा हिंदुस्तान इस छोटी सी कॉलोनी में उतर आया हो। इस कॉलोनी की औरतें अपनी भाषाओं में बात करती थी। यहाँ तक गीत, गाली तो मुझे कुछ भी समझ में न आता। उनकी गिट-मिट ऐसे लगती कि कबूतर गुटर-गूँ कर रहे हों। मराठी, गुजराती, उड़िया, कन्नड़, तेलगु, हरियाणवी, डोगरी आदि सभी भाषाएँ सुनने को मिलती। पंजाबी औरतें जब इनके साथ बातें करती तो उन पर रोब डालने के लिए टूटी-फूटी हिंदी हमको-तुमको पूरा जोर लगाकर बोलती।

देव इस यूनिट में स्टेशन हैडक्वार्टर का सुपरिटेंडेंट बनके आया था। इसलिए इस कॉलोनी में हमारी काफी इज्जत होती थी। वहां पर किसी न किसी के घर से उनके क्षेत्र का प्रसिद्ध पकवान हमारे घर पहुँच जाता था। इसके बदले में हम भी उनको पंजाब का शाही खाना (मक्की की रोटी तथा साग, लस्सी) भेज देते। यहाँ पर ठहरे हुए पूरा एक मास हो गया था मगर हमें हमारी पोस्ट के मुताबिक बड़ा घर नहीं मिला था। सुबह होते ही सभी जवान अपनी-अपनी ड्यूटी पर चले जाते थे। कॉलोनी की थोड़ी बहुत पढ़ी-लिखी फौजनें अपने काम-काज से फ्री होकर गली में बैठ जाती। सभी एक-दुसरे के साथ खुलकर मजाक करती।

अब जब मैं स्कूल से आई तो किसी भी घर के आगे चारपाई नहीं थी। कोई भी फौजन मुझे इधर-उधर चलती दिखाई न दी। बच्चों की भी आवाज नहीं आ रही थी। चारों तरफ कब्रिस्तान जैसा सूनसान माहोल था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि जहाँ दिन-रात हंसी-ख़ुशी की बरसात होती रहती है, बच्चों का बेहिसाब शौर होता है, वहां आज इतनी खौफनाक चुप्पी क्यों पसरी है? यहाँ सब-कुछ देखकर मैंने देव से पूछा आज इतना सन्नाटा क्यों है? आज मुंहफट फौजनें कौनसी गुफा में चली गई मैंने देखा कि देव खुद भी उदास बैठा था। यह देखकर मैं भी चकित हो गई। मेरे पूछने पर देव ने इतना ही कहा कि "जब बात ही उदास होने वाली हो तब।" देव

की अधूरी बात सुनकर मैं और भी डर गई। मुझे पूरा यकीन हो गया था कि यहाँ जरुर कोई दुर्घटना हुई है। फिर देव खुद ही बोल पड़ा "हमारे यूनिट के सभी फौजी जवान स्कीम पर जा रहे हैं। यह स्कीम तीन महीने की होती है। आपस में फौजी आमने सामने दुश्मन की तरह लड़ाई करने का अभ्यास करते हैं। कितनी दफा बदकिस्मती से इस स्कीम में भी कई फौजी अफसर या जवान मारे भी जाते हैं इसलिए स्कीम पर जाने से पहले यूनिटों की भलाई के लिए गुरुद्वारे में अखंड पाठ और मंदिरों में गीता तथा रामायण का पाठ, गिरिजाघर तथा मस्जिदों में भी प्रार्थनाएं की जाती हैं। यूनिट के सभी फौजी तथा उनके परिवार इन सभी धार्मिक स्थानों में जाते हैं।" मैं सारी वार्तालाप सुन रही थी, एकदम ही मेरे मुंह से निकला कि बेचारी फौजनें कहाँ जाती होंगी इन दिनों में। देव ने बताया कि, "जो पंजाब या हरियाणा से हैं वो अपने घर चली जाती होंगी तथा दूर रहने वालों की मजबूरी के कारण यहीं पर रह जाती हैं। अर्थात् जो कुछ फौजी यहाँ रह जाते हैं वो पीछे रह रहे फौजी फैमिलिज़ की देख-रेख तथा खाने-पीने का पूरा ख्याल रखते हैं।" मैंने अपने मन का डर छुपाते हुए कहा, देव, क्या आप भी जा रहे हो स्कीम पर...? नहीं मैं नहीं जा रहा हूँ। मेरी ड्यूटी पूरी युनिट के फौजियों की सैलरी बनाने तथा राशन-पानी मुहैया करवाने की लगी है। समुचा हिसाब-किताब मुझे रखने के लिए कहा गया है। इसलिए यहीं रहने का आदेश मिला है।" यह सुनकर मैं खुश हो गई पर फौजनों के चेहरों पर आई उदासी देखकर मैं खुद उदास हो गई थी।

एक सप्ताह के पश्चात् पूरी युनिट राजस्थान के लिए रवाना हो गई। पूरी कॉलोनी सुन-सान हो गई। दिन में भी अचानक सन्नाटा हो गया था। फौजनें घर के कोने में छिप-छिप कर रोती ऐसे लगता जैसे पानी में से निकली मछलियाँ तड़प रही हों। कुछ दिन के बाद कॉलोनी में फिर जिंदगियां धड़कने लगी। फौजनें पूरा दिन चारपाई तोड़ती रहती। मर्जी से उठती और मर्जी से सोती क्योंकि उनको घर में पूछने वाला कोई न होता। एक-दुसरी को अपने-अपने फौजियों की बातें करके छेड़ती। अगर कोई जवान कॉलोनी की जाँच-पड़ताल करने आता तो उसे सभी घेर लेती। अपनी-अपनी भाषा में हंसी-मजाक करती। क्योंकि वो उनके मुंह से स्कीम की कोई न कोई ख़बरें सुनने को उतावली रहती। जब वो उन फौजियों को एक पोस्टमैन की तरह युनिट के बारे में हाल-चाल पूछती तो उन में से कई फौजनें तो बातों-बातों में बहुत खुल जाती। उन बेचारों का इन फौजनों से जान बचाना मुश्किल हो जाता था। वह बेशक उदास रहती मगर कुछ समय के लिए वह फौजियों की डांट-डपट और सख्त कानून भरी जिंदगी से मिली राहत का खूब आनंद लेती। गर्मी का मौसम होने की वजह से सभी औरतें अपने घरों के आगे ही चारपाई बिछाकर सोती और मच्छरों के डर से मच्छरदानियाँ लगा लेती।

एक दिन आधी रात को शोर मच गया कि कोई डांगरी पहना हुआ फौजी किसी औरत की मच्छरदानी में घुस गया। जो पहरेदार थे वह हैरान थे कि, "कॉलोनी में कोई सिविलियन कैसे आ सकता है।" क्योंकि चारों तरफ सख्त पहरा था। किसी भी तरफ से चिड़िया भी फड़क नहीं सकती। अगले दिन जवान और भी सख्ती से पहरा देने लग पड़े। आधी रात को फिर वहीं शोर-शराबा शुरू हो गया। यह आवाज सुनकर देव एकदम उठा और तभी बाहर की और भाग गया। उसने एक छाया को भागते हुए देखा। वह उसके पीछे भागा। थोड़ी दूर जाकर उसने उस छाया को अपनी मजबूत बाहों में जकड़ लिया। जब देव को अजीब सा महसूस हुआ, तो उसने खुद उसको बोला कि अपने असली रूप में बाहर आओ नहीं तो शूट कर दूंगा। जब उसने डांगरी उतारी तो देव यह देखकर हैरान रह गया कि वो कोई भूत या आदमी नहीं था, वह एक औरत

थी। जो फौजी जवान की पत्नी ही थी। उसने बताया कि, "मुझे पता था कि फौजनें रात के समय कितनी डरती हैं।" मैंने तो केवल इनको डराने के लिए मजाक ही तो किया था। लेकिन आर्मी में यह सब नहीं चलता, जिसकी वजह से ऊपर वाले अधिकारियों को रिपोर्ट करनी पड़ी।

इन दिनों में मेरे इम्तिहान आ गये। मैं अपनी एम.ए. की पढ़ाई में बिजी हो गई। पेपरों से एक दिन पहले मैंने देव से कहा, "जब आप ड्यूटी पर जाओगे तो बाहर से ताला लगा देना। नहीं तो ये फौजनें मेरा दिमाग खाती रहेंगी।" मैं खिड़की की तरफ अपनी मेज लगा कर पढ़ने के लिए बैठ गई। अभी पढ़ने बैठी ही थी कि बहुत गिनती में फौजनें मेरे घर के बाहर बैठनी शुरू हो गई। कोई बहुत खुल कर हंस रही थी तथा कोई आपस में बहस कर रही थी। खूब शोर हो रहा था। मेरा मन अपनी पढ़ाई से उठ कर उनकी बातें सुनने में लग गया। मैं सोच रही थी कि अपने पतियों के बिछड़ने के दर्द को भूलने के लिए ही उनकी बातें कर के अपना मन बहला रही हैं ये बेचारी।

समय बीतता गया। स्कीम का आखिरी हफ्ता भी आ गया। फौजनों की जुदाई ख़त्म होने को थी। सभी औरतें बहुत खुश थी और अपने पतियों का सही सलामत लौटने का इंतज़ार कर रही थी। क्योंकि हमेशा ही स्कीम में कोई न कोई अनचाहा हादसा हो जाता था। फौजनें खुश भी बहुत थी लेकिन मन ही मन में किसी अनहोनी के होने के डर से कांप भी जाती थी।

आज पूरी युनिट को लौट आना था। इसलिए कॉलोनी को लाइटों से जगमगाया गया। दिन में सभी सज-संवर कर पति मिलन के गीत गा रही थी। जब सभी सोने की तैयारी कर ही रही थी कि एक गाड़ी पिंकी के घर के आगे रुकी। सभी की साँसें रूक गई। सभी सोच रहे थे की कौन आया होगा? कुछ लोग गाड़ी से किसी को बाहर निकाल रहे थे। उनके चेहरों पर बहुत गहरी उदासी थी। कोई भी किसी से बात-चीत नहीं कर रहा था। जब उस कपड़े में लिपटे बन्दे को पिंकी के घर के अन्दर ले जाकर बरामदे में लिटा दिया गया तो पता चला कि यह तो छोटी सी पिंकी के पापा का मृत शरीर था। वहीं जवान बता रहे थे कि इस बार स्कीम तो ठीक से ख़त्म हो गई थी, लेकिन वापसी के समय टैंकों की चपेट में रामचंद पता नहीं कैसे बीच में आ गया और टैंक के पहियों के बीच फंस गया। बड़ी कोशिश के साथ इसे निकाला, मगर बदकिस्मति से इसे बचा नहीं सके।

रामचंद की सबसे ज्यादा खुश रहने वाली फौजन पागलों की तरह इधर-उधर घूम रही थी। वो अपने मुंह पर जोर-जोर से चांटे मर रही थी। कह रही थी, "रामचंद तो सो रहा है। अभी सपना टूट जाएगा और रामचंद मुझे गले लगाएगा। सभी औरतें उसे होश में लाने की कोशिश कर रही थी कि रेणु, होश में आ, यह सपना नहीं, हकीकत है।" तेरा रामचंद मर चुका है।

गहरी रात हो गई थी। सबके घरों में लगे रंग-बिरंगे बल्ब रोशनी में जगमगा रहे थे। मगर रेणु के घर की रोशनी हमेशा के लिए ख़त्म हो गई थी। कुछ समय के लिए कॉलोनी वाले लोगों के मनों के अंदर भी अँधेरा हो गया था। सुबह हो चली थी, नींद आने का नाम नहीं ले रही थी।

मन में ख्याल आया कि रामचंद भाई साहब अपनी जान न्यौछावर करके चले गए। इस मृत्यु का क्या होगा। कौन से बॉर्डर पर दुश्मनों के साथ लड़ कर जान कुर्बान की, इन्हें कौन सा वीर-चक्र मिलेगा? नहीं। क्या कोई भी स्कीम इंसानी जिंदगी से ज्यादा जरुरी होती है? इतने वर्ष बीत जाने पर भी वो फौजी जवान जो स्कीम में मारे जाते हैं। वो सवाल मेरे मन में अभी भी सूल की तरह चुभता रहता है।

नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा

:- दिनेश तिवारी

मिस्टर एक्स एक प्राइवेट कम्पनी में लिपिक (बाबू) का काम करता था। उसने बचपन में एक अंग्रेजी की सीख पढ़ रखी थी कि इफ वैल्थ इज लास्ट नथिंग इज लास्ट, इफ हैल्थ इज लास्ट समथिंग इज लास्ट, इफ कैरेक्टर इज लास्ट इवरिथिंग इज लास्ट। यानि धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया लेकिन चरित्र गया तो सबकुछ चला गया। कैरेक्टर (चरित्र) का निर्माण अंतर्मन में होता है और यह कई वर्षों में निर्माण होता है। मिस्टर एक्स एक ईमानदार व चरित्रवान व्यक्ति था। जब कम्पनी के मालिक को बहुत फायदा हुआ तो उसने अपने पुराने रिटायर्ड कर्मचारियों की पेंशन रिविजन करके उनकी पेंशन को बढाने का आदेश दिया। उसके दफ्तर में हजारों की संख्या में पेंशन रिविजन केस आने लगे। रिविजन का काम तो बढ़ गया लेकिन काम करने वाले लिपिक की संख्या उतनी ही रही। इसलिए पेंशन रिविजन के काम में देरी होने लगी। कई लोग रिश्वत देकर या अपनी जान पहचान की आड़ लेकर अपना काम पहले करवाने लगे। धीरे धीरे कई लोग चपरासी से लेकर बड़े अधिकारी तक उस भ्रष्टाचार में लिप्त होने लगे। उस कम्पनी में काम करने वाले कई अधिकारी व उन अधिकारियों के नीचे काम करने वाले कर्मचारी अपने पद का दुरुपयोग करने लगे और अपने अधिकारियों के नाम पर लिपिकों के ऊपर दबाव देने लगे कि हमारे बड़े साहब ने अमुक आदमी की पेंशन रिविजन सबसे पहले करने के लिए कहा है। उनको पता था कि लिपिक तो गरीब आदमी होते हैं वो थोड़े ही हमारे बड़े साहब से आकर पुछेंगे कि आपने यह अमुक केस पहले करने के लिए कहा है। मिस्टर एक्स जानता था कि नियमानुसार जिनका पेंशन केस पहले आया है उनका रिविजन भी पहले किया जाना चाहिए और जो बाद में आया उनका बाद में होना चाहिए। यह तो नैसर्गिक नियम है।हांलाकि कंपनी के बोर्ड पर ऐसा लिखा भी था कि जिनका केस बाद में आयेगा उनका केस बाद में होगा यानि सीरियल नंबर के हिसाब से ही काम होगा। लेकिन सच्चाई कुछ और होने लगी। धीरे धीरे भाई-भतीजावाद व भ्रष्टाचार बढ़ने लगा।

मिस्टर एक्स नें यह बात अपने बड़े अधिकारी तक पहुंचाई कि इस कार्यालय में अब ज्यादा मात्रा में गलत काम होने लगा है क्योंकि अब तो कोई भी अधिकारी या अधिकारी के नाम पर बाद में आये हुए लोगों का काम पहले होने लगा है और आम (गरीब) लोगों का काम बाद में होने लगा है। तो बड़े अधिकारी ने कहा कि तुम नौकर हो, हम लोग जैसा चाहेंगे वैसा ही करना पड़ेगा, यही तो समय है कि लोग हमारा नाम जानें, हमारी वाहवाही व गुणगान करें कि हम कितने महत्त्वपूर्ण अधिकारी हैं। मिस्टर एक्स को यह लगता था कि ऐसी झूठी वाहवाही या लेन-देन के चक्कर में तो कम्पनी का नाम बदनाम हो जायेगा और उसने बडे अधिकारी से ये सारी बातें विस्तार से बतायी। तो उस बड़े अधिकारी ने मिस्टर एक्स को बहुत डराया, धमकाया और अपने पद का दुरुपयोग करने वाला अहंकारी कहने लगा कि तेरे को

तो नौकरी से ही निकलवा दुंगा, आदि-आदि। मिस्टर एक्स मजबुरी वश अपने अधिकारियों का कहना मान कर अपनी बाहर की आवाज को बंद कर दिया, लेकिन अंदर से आवाज आती रही कि वह उस कम्पनी में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए असमर्थ, मजबुर है। उसकी बात कोई नहीं सुनता।

मिस्टर एक्स के चरित्र को दाग लगने वाला है या दाग लग गया है यह उसको पता नहीं, ये तो पाठकगण बतायें, क्योंकि यदि चोरी नहीं करते हैं लेकिन चोरी होते देखते हैं या चोरी होनें में मजबुरी से भी सहयोग देते हैं, या चुप रहते हैं तो भी तो कर्तव्य का निर्वहन तो सही नहीं हुआ माना जाता है। कोर्ट में यह देखा जाता है कि यदि किसी नें चाकू मारा तो वह अपराधी है लेकिन उस चाकू को मरवाने के लिए किसी ने सहयोग किया या उकसाया या महौल बनाया तो उसको भी दण्ड का भागी होना पड़ता है। यदि कोई संसार के कोर्ट में बरी भी हो जाये लेकिन ऊपरवाले या समय (सच्चाई) के कोर्ट में तो कोई भी बरी नहीं हो सकता। कर्म की गति बड़ी गहन होती है। कर्म कभी बेकार नहीं जाता। आज नहीं तो कल उसका फल तो भोगना ही पड़ेगा। अच्छा किया तो अच्छा, बुरा किया तो बुरा। चाहे एक प्रतिशत चोरी/भ्रष्टाचारी की या सौ प्रतिशत की, चोरी/भ्रष्टाचारी तो चोरी/भ्रष्टाचारी ही है। कोई भी कर्म करें बड़े सोच समझ कर करें। आज तो अपने पूर्व के कर्मों के अनुसार बड़े अधिकारी या चपरासी बन गये हैं, लेकिन अगले जन्म में या इसी जन्म में जब अधिकारी या चपरासी के पद से रिटार्यड होंगे तो अधिकारीपना या चपरासीपना नहीं चलेगा और समय दण्ड देगा तो रोना नहीं कि मैनें तो कोई भी गलती नहीं की। यह किस चीज का दण्ड मिल रहा है। मिस्टर एक्स की बाहर की आवाज तो बंद करा दी गई लेकिन मन ही मन वह चिल्लाता रहा कि ऐ इंसान! न खुद भ्रष्टाचार कर, ना ही किसी ईमानदार व चरित्रवान को भ्रष्टाचार करने के लिए मजबूर कर, नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा।

भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

अमित शाह (गृह मंत्री)

पापा आई लव यू .....

:- आशीष देवगण

"आप कभी नहीं जानते हैं कि आप कब प्यार में पड़ जाते हैं, विशेष रूप से अपनी माँ और पिताजी के साथ।" 24 मार्च 2021

अचानक सब लोग टेलीविज़न से चिपक गये। हर कोई माननीय प्रधानमंत्री के राष्ट्र को संबोधित करने की प्रतीक्षा कर रहा था। अचानक माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्क्रीन पर दिखाई दिए और अपना भाषण शुरू किया। उन्होंने कोरोना वायरस की गंभीर चिंता पर चर्चा की और बताया कि किस तरह यह पूरी दुनिया को प्रभावित कर रहा था। तब सभी को आश्चर्यचकित करते हुए प्रधानमंत्री ने अगले इक्कीस दिनों के लिए "लॉकडाउन" की घोषणा की। हर कोई जानता था कि यह अवधि बढ़ने वाली थी, लेकिन हर कोई डॉक्टरों,पुलिसकर्मियों और अन्य सभी अधिकारियों की अच्छी सेहत के लिए प्रार्थना कर रहा था जो मानव जाति को बचाने के लिए दिन-रात काम कर रहे थे।

रोहन इस समय नौवीं कक्षा की परीक्षा में शामिल हुआ था। वह अपनी कक्षा का टॉपर था। उसके पिता एक सरकारी विभाग में वरिष्ठ क्लर्क के रूप में कार्यरत थे। उनकी माँ एक हाउस वाइफ थी। 31 मार्च को हर साल की तरह हर कोई अपने रिजल्ट का इंतज़ार कर रहा था। जल्द ही शिक्षा विभाग के आदेश आये कि 8 वीं कक्षा तक कोई बच्चा फैल नहीं होना चाहिए और 9 वीं कक्षा में और 11 वीं का परिणाम उनके पिछले रिकॉर्ड के आधार पर घोषित किया जाना चाहिए।

रोहन अब 10 वीं कक्षा का छात्र था, एक बोर्ड की कक्षा का विद्यार्थी था। वह बहुत उत्साहित था क्योंकि उसकी ऑनलाइन कक्षाएं शुरू होने जा रही थी। उसके पिता ने उससे पूछा कि क्या वह किसी भी तरह से उसकी मदद कर सकते हैं, रोहन ने हँसते हुए कहा, "पिताजी, आपने सरकारी स्कूल में पढ़ाई की है और अब एक क्लर्क के रूप में काम कर रहे हैं। मैं एक डॉक्टर बनना चाहता हूँ। बस इंतज़ार करें और देखें, मैं पहले प्रयास में NEET परीक्षा को पास करूंगा।"

उसके पिताजी ने कुछ नहीं कहा और अखबार पढ़ना शुरू किया। पहली कक्षा से 9 वीं तक रोहन हमेशा टॉपर रहा। उसके शिक्षकों ने हमेशा उसके काम की सराहना की। रोहन को कभी भी अपने माता-पिता को अपने पेरेंट्स टीचर्स मीटिंग में शामिल होना पसंद नहीं आया। वह अपनी माँ को अपने साथ पेरेंट्स टीचर्स मीटिंग में ले जाया करता था क्योंकि उनके पास आकर्षक व्यक्तित्व था। ज्यादातर माता-पिता महंगी कारों से आते थे और उसके पिता के पास एक पुराना स्कूटर था। रोहन स्कूल में अपने भाषण देने के कौशल के लिए प्रसिद्ध था, लेकिन उसने कभी अपने पिता को अंग्रेजी में बोलते नहीं देखा।

रोहन की सबसे बड़ी चिंता यह थी कि घर पर समय कैसे बिताया जाए। उसे ऑनलाइन असाइनमेंट मिल रहे थे। वह उन्हें हल करने वाला पहला व्यक्ति बनना पसंद करता था। जब भी कोई

परेशानी आई तो वह अपने पड़ौसी श्रीनिवासन के पास चला जाता था, जो कि एक इंजिनियर थे। वह चिंतित था क्योंकि लॉकडाउन अवधि के दौरान किसी को भी अपने घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी। 10 वीं कक्षा में गणित और विज्ञान की नई अवधारणायें थीं।

किसी ने कभी यह उम्मीद नहीं की थी कि मोबाइल फ़ोन जो एक दिन अभिशाप था अब एक अच्छे दोस्त के रूप में सेवा दे रहा था। अधिकांश छात्र मोबाइल फ़ोन पर अपना काम कर रहे थे। रोहन कभी भी मोबाइल फोन का इस्तेमाल करना पसंद नहीं करता था, लेकिन अब उसके पास कोई विकल्प नहीं था।

हर दिन वह अपने शिक्षकों से काम लेता था और हमेशा अपने शिक्षकों को अपनी शीट सबसे पहले भेजने की कोशिश करता था। वह हमेशा नंबर एक की पोजीशन पर रहने का आनंद लेता था। चूंकि कक्षा के मानक उच्च थे, कभी-कभी रोहन को मैथ्स में कठिनाई आती थी। उसने पाया कि त्रिकोणमिति वास्तव में कठिन है। जब कभी उसके पिता ने उसकी कोई मदद करनी चाही तो वह अपने पिता पर बहुत हँसता था।

एक दिन उसके मैथ्स के शिक्षक ने एक वर्कशीट भेजी जिसमें त्रिकोणमिति के कुछ प्रश्न थे। रोहन ने सवालों को हल करने की पूरी कोशिश की लेकिन वह असफल रहा। वह हाथ में मैथ्स की शीट लेकर सो गया। उसके पिता ने रोहन के हाथ से वह शीट ली और सवाल हल कर दिए।

सुबह जब रोहन ने देखा, तो वह बहुत नाराज हुआ लेकिन उसके पास कोई विकल्प नहीं था इसलिए उसने उस शीट को अपने मैथ्स के शिक्षक के पास भेज दिया। वह वास्तव में डर गया था क्योंकि पहली बार उसे यकीन था कि उसके मैथ्स शिक्षक उसे डांटेंगे। दोपहर में उसके मैथ्स के शिक्षक ने फ़ोन किया और उससे पूछा कि उस सवाल को किसने हल किया है। रोहन घबरा गया लेकिन उसने सच कहा। रोहन उस समय हैरान रह गया जब उसके मैथ्स के शिक्षक ने उसे अपने पिता को बुलाने के लिए कहा। जब रोहन ने इसका कारण पूछा तो उनके मैथ्स के शिक्षक ने कहा, “मैं तुम्हें सच कहूं तो मैं भी इस सवाल को हल नहीं कर सका। यह आईआईटी के सैंपल पेपर से था। गलती से मैंने इसे छात्रों को भेज दिया था।”

रोहन को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था लेकिन उसने अपने पिता को फ़ोन पर बुलाया और उसे अपने मैथ्स शिक्षक से बात करने को कहा। शिक्षक ने कहा,“सर, आपने जिस तरह से प्रश्न को हल किया है, मैं उसे देखकर वास्तव में हैरान हूँ। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आपने अपनी पढ़ाई कहाँ से की है? मुझे यकीन है कि आप किसी प्रतिष्ठित संस्थान का उत्पाद हैं।

“अरे नहीं! मेरी शिक्षा चांदपुर के एक सरकारी स्कूल से हुई है” रोहन के पिता ने जवाब दिया। मैथ्स के शिक्षक ने जवाब दिया,“मैं भी चांदपुर का हूँ। मैंने अपनी 12 वीं की शिक्षा चांदपुर सीनियर सेकेंडरी स्कूल से 1990 में पूरी की थी।” रोहन के पिता खुद को रोक नहीं सके, उन्होंने जवाब दिया, “मैं उसी बैच में था। मेरा नाम अभय झा है, क्या मैं आपका शुभ नाम जान सकता हूँ?” उन्होंने पूछा। मैथ्स

के शिक्षक ने जवाब दिया, "हे अभय, मैं रोहित माथुर हूँ, यार तुम हमारे बैच के टॉपर थे। इन दिनों क्या कर रहे हो, हमें उम्मीद है कि आप कुछ आईआईटी विद्वान होंगे।" रोहन ने देखा कि चेहरे पर दुःख के साथ पिता ने जवाब दिया, "हाँ, मैंने एआईईई पास कर लिया था लेकिन वित्तीय कारणों से मैं इसके लिए नहीं जा सका। अब मैं लेखा कार्यालय इलाहाबाद में सीनियर क्लर्क के रूप में काम कर रहा हूँ। किसी दिन हमारे घर आओ।" फिर उसने फ़ोन काट दिया।

रोहन वहां नहीं था क्योंकि वह अपने मैथ्स शिक्षक के साथ अपने पिता की बातचीत को सुनना नहीं चाहता था।

अगले दिन रोहन के पास उसके प्रिंसिपल का फ़ोन आया। वह रोहन के पिता से बात करना चाहता था। रोहन वास्तव में डर गया, उसने सोचा कि उसके मैथ्स के शिक्षक ने प्रिंसिपल से उसकी शिकायत की हो सकती है कि उसने एक दिन पहले क्या किया था लेकिन उसके पास कोई विकल्प नहीं था इसलिए उसने अपने पिता को फ़ोन पर बुलाया। उसने फ़ोन अपने पिता को सौंप दिया और उन्हें बताया कि उनके प्रिंसिपल उनसे बात करना चाहते हैं। वह इस उद्देश्य से जानना चाहता था कि उनके प्रधानाचार्य ने उनके पिता को फ़ोन क्यों किया था। जिस तरह से उसके पिता ने बातचीत शुरू की, वह आश्चर्यचकित था। उसके पिता उत्कृष्ट अंग्रेजी बोल रहे थे, "हाँ सर, मैं रोहन का पिता बोल रहा हूँ, मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है। मैं आपके सक्षम मार्गदर्शन में अपने बेटे को पाकर सम्मानित महसूस कर रहा हूँ।" प्रधानाचार्य ने जवाब दिया, "कल, श्रीमान रोहित ने मुझे आपके बारे में बताया। मैं वास्तव में प्रभावित हूँ। चूँकि स्कूल बंद है और हम नहीं जानते कि स्कूल फिर से कब खुलेंगे। यदि आप "ज़ूम एप्प" के माध्यम से आई.आई.टी. प्रतियोगिता के लिए +2 के हमारे छात्रों को तैयारी करने में हमारी सहायता करते हैं तो मैं वास्तव में आपका आभारी रहूँगा। आपको आपकी सेवाओं के लिए भुगतान किया जायेगा।"

रोहन के पिता ने बहुत विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, "यह मेरे लिए बहुत मुश्किल होगा क्योंकि हमारा कार्यालय अभी भी काम कर रहा है लेकिन हाँ सप्ताहांत में मैं दो घंटे के लिए समय निकाल सकता हूँ। मुझे उम्मीद है कि यह आपके उद्देश्य की पूर्ति करेगा।"

प्रधानाचार्य ने उनके उत्तर के लिए धन्यवाद दिया और उन्हें बताया की सभी व्यवस्थाओं को पूरा करने के बाद उन्हें सूचित किया जाएगा।

रोहन ने अपने पिता से कुछ नहीं पुछा, लेकिन अपने मैथ्स के शिक्षक को फ़ोन किया और उनसे फ़ोन करने के बारे में पूछा। उनके मैथ्स शिक्षक ने उनसे कहा, "अब मुझे पता चला है कि तुम इतने प्रतिभाशाली क्यों हो। यह सब परिवार से आता है। तुम्हें पता है, तुम्हारे पिता हमारे बैच के टॉपर थे। उन्होंने दसवीं और बारहवीं कक्षा में गणित और विज्ञान में 100 में से 100 अंक हासिल किये। मैं उनका बैच मेट था। वह अंग्रेजी में भी सर्वश्रेष्ठ थे। हम उससे ईर्ष्या करते थे क्योंकि वह उन दिनों सभी प्रतियोगिताओं को जीतता था। लगातार 5 वर्षों तक उन्होंने सर्वश्रेष्ठ छात्र का पुरस्कार जीता।" रोहन को

इन बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसके मैथ्स के शिक्षक ने जारी रखा, "उसने आईआईटी प्रवेश परीक्षा भी पास कर ली लेकिन अपनी वित्तीय स्थिति के कारण वह इसके लिए नहीं जा सका। आप वास्तव में बहुत भाग्यशाली हैं। मैंने प्रधानाचार्य को तुम्हारे पिता के बारे में बताया और उन्होंने आईआईटी प्रवेश परीक्षा के लिए बारहवीं कक्षा के छात्रों का मार्गदर्शन करने के लिए तुम्हारे पिता को फ़ोन किया। तुम्हारे पिता ने उनको स्वीकृति दे दी है। वह ज़ूम एप्प के माध्यम से लॉकडाउन अवधि के दौरान छात्रों को पढ़ाएंगे।"

रोहन की आँखों में आंसू थे। उसने कभी अपने पिता को महत्व नहीं दिया लेकिन वह इस सब के बारे में सीधे अपने पिता से बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। इसलिए, वह अपनी माँ के पास गया और अपने पिता और उसकी शैक्षणिक उपलब्धियों के बारे में पूछा।

उसकी माँ को कोई भी आश्चर्य नहीं हुआ और उसकी माँ ने उसे बताया कि उसकी माँ और पिता एक ही गाँव के थे। उसकी माँ ने उसे बताया कि उसके पिता शुरू से ही एक शर्मीले सज्जन थे और गाँव की हर युवा लड़की उनसे शादी करना चाहती थी। अचानक वह बहुत गंभीर हो गई और उसने रोहन से कहा, "मैंने अभी दसवीं की परीक्षा दी थी और मेरे पिता ने मुझे सोहनपुर के एक लड़के से मिलाया और हमारी शादी पक्की कर दी। हमारा मध्यमवर्गीय परिवार था, सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा था लेकिन शादी के दिन दुल्हे के पिता ने दस हजार रुपये मांगे लेकिन मेरे पिता इसकी व्यवस्था नहीं कर सके। इसलिए शादी के एक दिन पहले मेरे तथाकथित ससुराल वाले शादी तोड़कर चले गए। मुझे आत्महत्या करने जैसा लगा। तुम्हारे पिता को नौकरी मिल चुकी थी और उन्हें बहुत अमीर परिवारों से शादी के प्रस्ताव मिल रहे थे लेकिन मुझे नहीं पता कि उनके दिमाग में क्या आया और आगे जाकर मुझसे पूछा कि क्या मैं उनसे शादी करने के लिए तैयार हूँ। मुझे अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हो रहा था। इस तरह हमने शादी की।" फिर उसने रोहन से पूछा, "क्या तुमने कभी देखा है कि हमारी कॉलोनी के सभी बच्चे सरकारी स्कूल में जाते हैं लेकिन तुम्हारे पिता ने तुम्हें शहर के सबसे अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाया है। वह अच्छी शिक्षा का मूल्य जानते हैं। वह तुमसे कभी "नहीं" नहीं कहते हैं। लेकिन खुद के लिए वह सभी आधारों पर समझौता करते हैं। वास्तव में तुम बहुत भाग्यशाली हो कि तुम्हें ऐसे पिता मिले हैं।"

अगली सुबह जब रोहन उठा तो उसके सामने उसकी अगली मैथ्स वर्कशीट थी। प्रश्न आसान थे, लेकिन वह पिता के पास गया और उनसे पूछा, "पापा, कृपया इस कार्यपत्रक को हल करने में मेरी मदद करें और मेरे लिए कुछ समय खाली रखा करें। मैं चाहता हूँ कि आप भौतिकी की नई अवधारणाओं को भी स्पष्ट करने में मेरी मदद करें।"

कहीं न कहीं वह दिल ही दिल में भगवान को लॉकडाउन के लिए धन्यवाद कर रहा था।

कार्यालय समाचार

खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियां

1. श्री आकाश वशिष्ठ, क्रिकेट खिलाड़ी ने दिनांक 01-04-2021 से 15-04-2021 तक धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश में रणजी ट्रॉफी कैंप में भाग लिया।
2. श्री आकाश वशिष्ठ, क्रिकेट खिलाड़ी ने दिनांक 26-07-2021 से 30-06-2021 तक प्री टूर्नामेंट कैंप में तथा दिनांक 31-07-2021 से 25-08-2021 तक रणजी सिलेक्शन मैचों में भाग लिया।
3. श्री अर्पित सिंह, क्रिकेट खिलाड़ी ने दिनांक 23-08-2021 से 27-08-2021 तक यू.टी. सी.ए.जी. डोमेस्टिक क्रिकेट टूर्नामेंट में तथा दिनांक 01-09-2021 से 07-09-2021 तक जे.पी.अत्री क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग लिया।
4. श्री आकाश वशिष्ठ, क्रिकेट खिलाड़ी ने दिनांक 14-09-2021 से 30-04-2021तक धर्मशाला में एच.पी.सी.ए. रणजी ट्रॉफी कैंप में भाग लिया।
5. श्री अर्पित सिंह तथा श्री जसकरणदीप सिंह, क्रिकेट खिलाड़ियों ने दिनांक 22-09-2021 से 05-10-2021 तक यू.टी.सी.ए. सीनियर डोमेस्टिक वन डे क्रिकेट टूर्नामेंट में तथा श्री आकाश वशिष्ठ ने दिनांक 03-10-2021 से 26-10-2021 तक एच.पी.सी.ए. रणजी टीम में सैय्यद मुश्ताक अली ट्रॉफी में भाग लिया।
6. श्री अंकित कौशिक, क्रिकेट खिलाड़ी ने दिनांक 23-08-2021 से 11-09-2021 तक सी.ए.जी की क्रिकेट टीम के सिलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैंप तथा टूर्नामेंट में भाग लिया।
7. श्री अर्पित सिंह, श्री जसकरणदीप सिंह और श्री अंकित कौशिक क्रिकेट खिलाड़ियों ने दिनांक 18-10-2021 से 22-11-2021 तक यू.टी.सी.ए. सीनियर पुरुष क्रिकेट टीम में (सैय्यद मुश्ताक अली ट्रॉफी टी-20) में भाग लिया।
8. श्री अर्पित सिंह, श्री जसकरणदीप सिंह और श्री अंकित कौशिक क्रिकेट खिलाड़ियों ने दिनांक 16-11-2021 से 29-11-2021 तक यू.टी.सी.ए. सीनियर पुरुष क्रिकेट टीम में (सैय्यद मुश्ताक अली ट्रॉफी टी-20) में भाग लिया।
9. श्री अंकित कौशिक, श्री अर्पित सिंह और श्री जसकरणदीप सिंह क्रिकेट खिलाड़ियों ने दिनांक 27-12-2021 से 06-01-2022 तक क्रिकेट स्टेडियम सेक्टर-16 चंडीगढ़ में यू.टी.सी.ए. सीनियर पुरुष क्रिकेट टीम में भाग लिया।
10. श्री आकाश वशिष्ठ, क्रिकेट खिलाड़ी ने दिनांक 02-01-2022 से 10-02-2022 तक एच.पी.सी.ए. (HPCA) रणजी ट्रॉफी टीम कैंप में तथा दिनांक 13-01-2022 से 20-03-2022 तक रणजी मैचों में भाग लिया।
11. श्री अंकित कौशिक, श्री अर्पित सिंह, श्री आकाश वशिष्ठ और श्री जसकरणदीप सिंह क्रिकेट खिलाड़ियों ने दिनांक 14-03-2022 से 17-03-2022 तक सी.ए.जी की क्रिकेट टीम के सिलेक्शन ट्रायल कैम्प में भाग लिया।
12. श्री रनदीप सिंह तथा श्री सौरव रूटेला फुटबॉल खिलाड़ियों ने दिनांक 13-08-2021 से 22-08-2021 तक चंडीगढ़ में सी.ए.जी. की फुटबॉल टीम के सिलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैंप में भाग लिया।

13. श्री रनदीप सिंह, फुटबॉल खिलाड़ी ने संतोष ट्रॉफी के लिए दिनांक 23-10-2021 से 18-11-2021 तक कोचिंग कैंप में भाग लिया।
14. श्री रनदीप सिंह फुटबॉल खिलाड़ी ने दिनांक 22-12-2021 से 26-12-2021 तक तथा श्री सौरव रूटेला फुटबॉल खिलाड़ी ने दिनांक 21-12-2021 से 26-12-2021 तक सी.ए.जी. की फुटबॉल टीम के सिलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैंप तथा चीफ मिनिस्टर्स कप में भाग लिया।
15. ए.जी. पंजाब की संयुक्त फुटबॉल टीम ने दिनांक 01-04-2022 से 03-04-2022 तक प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में उत्तर क्षेत्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता 2021-22 में भाग लिया।
16. ए.जी. पंजाब की संयुक्त हॉकी टीम ने दिनांक 02-04-2022 से 04-04-2022 तक चंडीगढ़ में उत्तर क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता 2021-22 में भाग लिया।
17. इस कार्यालय के श्री अंकित कौशिक, श्री अमित काकडीया, श्री अर्पित सिंह और श्री जसकरणदीप सिंह क्रिकेट खिलाड़ियों ने दिनांक 10-03-2022 से 15-03-2022 तक नई दिल्ली में ऑल इंडिया सिविल सर्विसेज क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग लिया।
18. इस कार्यालय के श्री शीशराम, उप महालेखाकार (प्रशासन), श्री गौरव देशवाल, लेखाकार तथा श्री कशिश, लेखाकार, बैडमिंटन खिलाड़ियों ने दिनांक 24-03-2022 से 30-03-2022 तक पंचकूला, हरियाणा में ऑल इंडिया सिविल सर्विसेज क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग लिया।
19. इस कार्यालय के श्री रनदीप सिंह, श्री सौरव रूटेला तथा श्री कुलदीप सिंह, फुटबॉल खिलाड़ियों ने दिनांक 10-03-2022 से 15-03-2022 तक नई दिल्ली में ऑल इंडिया सिविल सर्विसेज फुटबॉल टूर्नामेंट में भाग लिया।
20. इस कार्यालय के श्री शीशराम, उप महालेखाकार (प्रशासन), श्री गौरव देशवाल, लेखाकार तथा श्री कशिश, लेखाकार, बैडमिंटन खिलाड़ियों ने दिनांक 24-09-2021 से 30-09-2021 तक नई दिल्ली में अखिल भारतीय सिविल सेवा बैडमिंटन प्रतियोगिता 2020-2021 में भाग लिया।
21. इस कार्यालय के श्री राहुल मल्होत्रा, टेबल टेनिस खिलाड़ी ने दिनांक 24-09-2021 से 29-09-2021 तक नई दिल्ली में अखिल भारतीय सिविल सेवा टेबल टेनिस प्रतियोगिता 2020-2021 में भाग लिया।
22. इस कार्यालय के ध्यान सिंह, जगरूप सिंह, संदीप सिंह, मुकुल भार्गव और श्री गुरप्रताप सिंह, हॉकी खिलाड़ियों ने दिनांक 23-09-2021 से 30-09-2021 तक कुरुक्षेत्र, हरियाणा में अखिल भारतीय सिविल सेवा हॉकी प्रतियोगिता 2020-2021 में भाग लिया।
23. श्री गौरव देशवाल और श्री कशिश, बैडमिंटन खिलाड़ियों ने दिनांक 16-12-2021 से 22-12-2021 तक तमिलनाडू में तथा दिनांक 24-12-2021 से 30-12-2021 तक हैदराबाद में BAI सीरीज सीनियर बैडमिंटन टूर्नामेंट 2021 में भाग लिया।
24. श्री कशिश, बैडमिंटन खिलाड़ी ने दिनांक 11-01-2022 से 16-01-2022 तक योनेक्स सनराइज एच.एस.बी.सी.बीडब्ल्यू एफ. वर्ल्ड टूर सुपर 500 इंडिया ओपन 2022 में तथा दिनांक 18-01-2022 से 23-01-2022 तक सैय्यद मोदी इंटरनेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप में तथा दिनांक 25-01-2022 से 30-01-2022 तक ओडिशा ओपन 2022 प्रतियोगिता में भाग लिया।

25 श्री शीशराम, उप महालेखाकार (प्रशासन) महोदय ने दिनाँक 24-02-2022 से 26-02-2022 तक सी.ए.जी. के 13 वें टेनिस प्रतियोगिता में तथा दिनाँक 26-02-2022 से 28-02-2022 तक नई दिल्ली में बैडमिंटन खेल में भारतीय खेल प्राधिकरण की ओर से 24 वें ग्रीष्मकालीन डेफलिम्पिक्स, ब्राजील राष्ट्रीय ट्रायल में भाग लिया।

26. श्री कशिश, बैडमिंटन खिलाड़ी ने दिनांक 11-01-2022 से 16-01-2022 तक योनेक्स सनराइज एच.एस.बी.सी. बीडब्ल्यू एफ वर्ल्ड टूर सुपर 500 इंडिया ओपन 2022 में तथा दिनांक 18-01-2022 से 23-01-2022 तक सैय्यद मोदी इंटरनेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप में तथा दिनांक 25-01-2022 से 30-01-2022 तक ओडिशा ओपन 2022 प्रतियोगिता में भाग लिया।

27. राहुल मल्होत्रा, वरिष्ठ लेखाकार, टेबल टेनिस खिलाड़ी ने दिनांक 07-12-2021 से 14-12-2021 तक देहरादून में राष्ट्रीय रैंकिंग टेबल टेनिस चैंपियनशिप में भाग लिया।

28. राहुल मल्होत्रा, वरिष्ठ लेखाकार, टेबल टेनिस खिलाड़ी ने दिनांक 23-10-2021 से 28-12-2021 तक यू.टी.टी. नैशनल रैंकिंग नार्थ जोन टेबल टेनिस चैंपियनशिप 2021 में भाग लिया।

29. राहुल मल्होत्रा, वरिष्ठ लेखाकार, टेबल टेनिस खिलाड़ी ने दिनांक 30-09-2021 से 03-11-2021 तक 62 वीं पंजाब स्टेट ओपन और इंटर डिस्ट्रिक्ट टेबल टेनिस चैंपियनशिप 2021 में भाग लिया।

30. इस कार्यालय के प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2021 मनाया गया जिसमें श्री सुशील कुमार ठाकुर, डायरेक्टर जनरल ऑफ़ ऑडिट (सेंट्रल) चंडीगढ़ ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया तत्पश्चात कार्यालय में उपस्थित कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई।

31 इस कार्यालय के परीक्षा हॉल में दिनांक 08-03-2022 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्रीमती प्रतीक कौर,सहायक लेखा अधिकारी द्वारा लेक्चर दिया गया तत्पश्चात एक लघु कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया, जिसमें कार्यालय में उपस्थित सभी महिला स्टाफ ने भाग लिया।

32. श्री विजय आहुजा,खजांची,बालीबाल खिलाड़ी ने दिनांक 12 से 22 दिसंबर 2021 तक कुरुक्षेत्र, हरियाणा में नॉर्थ जोन इंटर यूनिवर्सिटी बालीबाल (पुरुष और महिला) चैंपियनशिप 2021-22 में तकनीकी रेफरी के रूप में भाग लिया।

33. श्री विजय आहुजा,खजांची,बालीबाल खिलाड़ी ने दिनांक 05-03-2021 से 11-03-2021 तक भुवनेश्वर, ओडिशा में 69 वीं सीनियर नैशनल बालीबाल पुरुष और महिला के लिए चैंपियनशिप 2021-22 में रेफरी के रूप में भाग लिया।

अधिकारियों / कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति

(01-04-2021 से 31-03-2022)

क्र. सं.	सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पद श्री/श्रीमती	सेवानिवृत्ति की तिथि	टिप्पणी
1	बलविन्द्रजीत कौर	30-04-2021	--
2	विजय सिंह भनोट,सहायक पर्यवेक्षक	30-04-2021	--
3	सुरेश कुमार, वरिष्ठ लेखाकार	30-04-2021	--
4	सुच्चा राम, एम.टी.एस.	30-04-2021	--
5	सुनील कुमार गुप्ता, वरिष्ठ लेखाकार	31-05-2021	--
6	राम लाल, वरिष्ठ लेखाकार	31-05-2021	--
7	वीरेन्द्र शर्मा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31-07-2021	--
8	रंजीत सिंह नेगी, पर्यवेक्षक	31-07-2021	--
9	गुलजार सिंह, लेखाकार	31-07-2021	--
10	हरप्रीत सिंह, पर्यवेक्षक	31-08-2021	--
11	चन्द्र प्रभा, पर्यवेक्षक	31-08-2021	--
12	कमल सरोज, सहायक पर्यवेक्षक	05-10-2021	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
13	वनिता, वरिष्ठ लेखाकार	29-10-2021	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
14	रीटा कुमारी, सहायक पर्यवेक्षक	30-11-2021	--
15	गुरदेव राज, लेखाकार	11-01-2022	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
16	भक्ता बहादुर, कैंटीन अटेंडेंट	31-01-2022	--
17	मामन, एम.टी.एस.	28-02-2022	--
18	कीमती लाल, सहायक पर्यवेक्षक	28-02-2022	--
19	अशोक कुमार शर्मा, सहायक पर्यवेक्षक	28-02-2022	--
20	वीना रानी, पर्यवेक्षक	31-03-2022	--
21	नीरज अरोरा, पर्यवेक्षक	31-03-2022	--
22	वीना कौशल, आशुलिपिक I	31-03-2022	--
23	सुरेश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	31-03-2022	--
24	राय सिंह, एम.टी.एस.	31-03-2022	--

सभी सेवानिवृत्त अग्रज साथियों की दीर्घायु तथा उनके सुखी एवं स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन के लिए "अंकुर" परिवार की और से हार्दिक शुभकामनाएं।

अधिकारियों/कर्मचारियों की नियुक्ति एवं पदोन्नति
(01-04-2021 से 31-03-2022)

क्र. सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पद श्री/श्रीमती	पदोन्नति	तिथि	टिप्पणी
1	अंकित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक		03-05-2021	--
2	मनीष कुमार, कनिष्ठ अनुवादक		04-05-2021	
3	जसबीर अंतिल, लेखाकार		20-01-2022	
4	विशाल शर्मा, लेखाकार		17-01-2022	--
5	परविंदर, लेखाकार		10-03-2022	--
6	अर्पित सिंह, क्लर्क	लेखाकार	03-01-2022	--
7	आकाश वशिष्ठ, क्लर्क	लेखाकार	03-01-2022	--
8	कशिश, क्लर्क	लेखाकार	03-01-2022	–
9	गौरव देशवाल, क्लर्क	लेखाकार	03-01-2022	--
10	जिशान खान, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
11	अभिनाश कुमार, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
12	गौरव कुमार, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
13	राकेश कुमार 2, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
14	राकेश कुमार 1, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
15	सीतेश कुमार, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
16	विनय कुमार, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
17	दीपक कुमार, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
18	दीपक कुमार-1, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
19	जय प्रकाश मीना, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
20	अमरेश मीना, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
21	अनिल कुमार मीना, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
22	पंकज कुमार यादव, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
23	दीपक शर्मा, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
24	रितेश कुमार जैसवाल, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
25	राजीव रंजन मिश्रा, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
26	त्रिलोचन सिंह, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
27	किशोर चन्द्र, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
28	काजल कुमारी, एम.टी.एस.	लेखाकार	03-01-2022	--
29	मुन्नवर हुसैन, एम.टी.एस.	क्लर्क	03-01-2022	--

30	कृष्ण लाल, सहायक प्रबंधक	सह स्टोर कीपर	14-03-2022	--
31	तरुणा कानोजिया, स.ले.अ. (तदर्थ)	स.ले.अ.	21-01-2022	--
32	संदीप सिंह, मंडलीय लेखा अधिकारी 2	स.ले.अ.	21-01-2022	--
33	दीपक अत्री, स.ले.अ. (तदर्थ)	स.ले.अ.	21-01-2022	--
34	अमर सिंह मीना, स.ले.अ. (तदर्थ)	स.ले.अ.	21-01-2022	--
35	रफीक खान, स.ले.अ. (तदर्थ)	स.ले.अ.	21-05-2021	--
36	राहुल वर्मा, स.ले.अ. (तदर्थ)	स.ले.अ.	21-05-2021	--
37	सौरभ बंसल, स.ले.अ. (तदर्थ)	स.ले.अ.	21-05-2021	--
38	अजय कुमार, मंडलीय लेखा अधिकारी 2	स.ले.अ.	21-05-2021	--
39	राम पाल, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	03-05-2021	--
40	रवीन्द्र सिंह भाटिया, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	03-05-2021	--
41	विजय कुमारी, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	03-05-2021	--
42	मीना रावत, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-06-2021	--
43	उमेश कुमार, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-06-2021	--
44	रीटा कुमारी, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-06-2021	--
45	कमल सरोज, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-06-2021	--
46	विजय आहूजा, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-06-2021	--
47	सुजीत चौधरी, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-06-2021	--
48	मोमा रानी, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-06-2021	--
49	वेद प्रकाश 2, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-06-2021	--
50	सुखदेव सिंह, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-06-2021	--
51	मीना कुमारी, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-09-2021	--
52	अमरजीत सिंह 1, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-09-2021	--
53	तीरथ राम, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-09-2021	--
54	मनोहर लाल मीना, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-09-2021	--
55	शिव भगत नेगी, वरिष्ठ लेखाकार	सहायक पर्यवेक्षक	01-09-2021	--
56	संगीता डांग, सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	03-05-2021	--
57	अशोक कुमार गुप्ता, सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	01-09-2021	--
58	कर्णोधरा नन्द, सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	01-09-2021	--
59	सुखदेव सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	पर्यवेक्षक	01-09-2021	--
60	राहुल,एम.टी.एस.		15-06-2021	--

अधिकारियों/कर्मचारियों का देहावसान

(01-04-2021 से 31-03-2022)

क्र. सं.	दिवंगत अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पद	देहावसान की तिथि	टिप्पणी
1	स्व. जगत किशोर, एम.टी.एस.	02-08-2021	देहावसान
2	स्व. योगेश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	05-11-2021	देहावसान
3	स्व. मोमा रानी , सहायक पर्यवेक्षक	23-11-2021	देहावसान
4	स्व. सुरेश पाल, एम.टी.एस.	24-12-2021	देहावसान
5	स्व. मंजीत सिंह, लेखाकार	17-02-2022	देहावसान
6	स्व. अमन कुमार, स.ले.अ. (तदर्थ)	21-03-2022	देहावसान
7	स्व. संत लाल, लेखाकार	27-03-2022	देहावसान

अलविदा

उक्त अधिकारी/कर्मचारी अपनी जीवन-यात्रा पूरी करके अखण्ड ज्योति में समा गये। 'अंकुर' परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति भाव-भीनी श्रृद्धांजलि।

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

मदन मोहन मालवीय

ध्वजारोहण

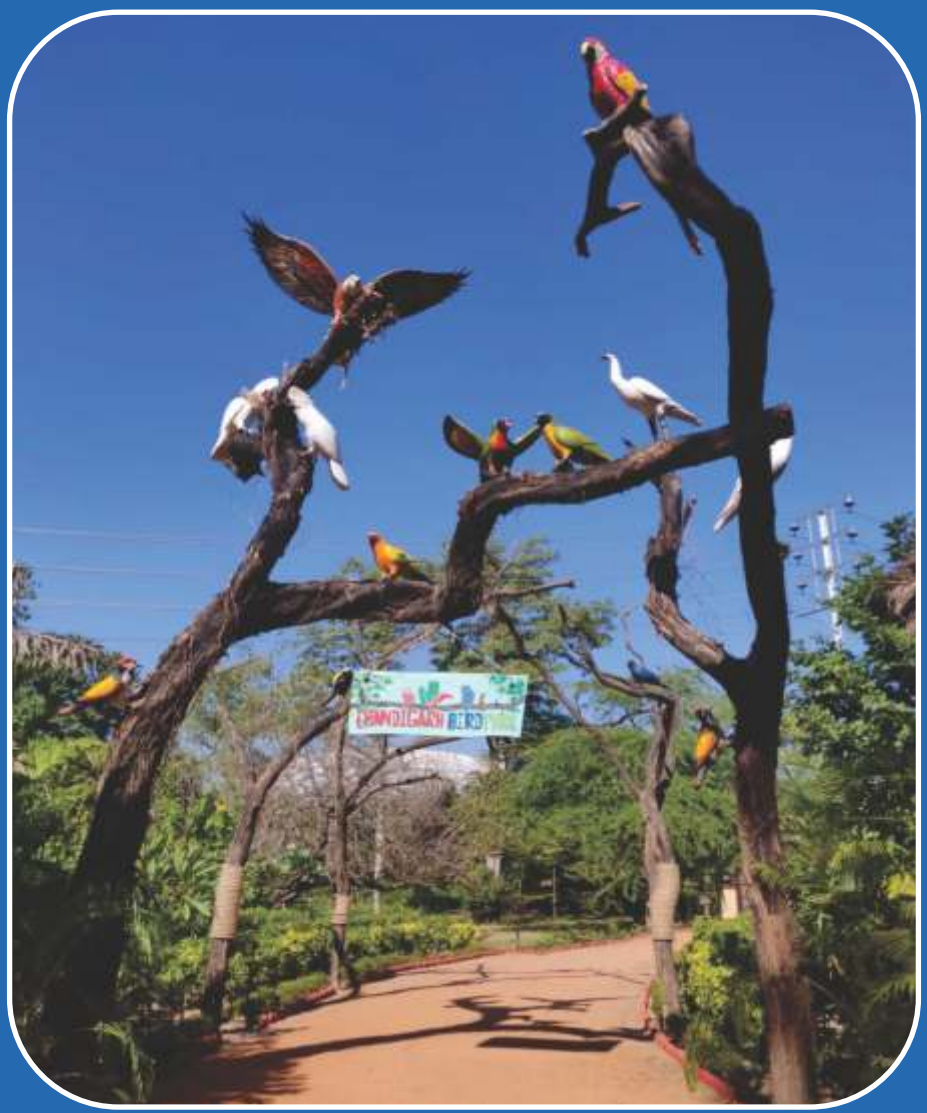

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा कार्यान्वयन समिति,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017